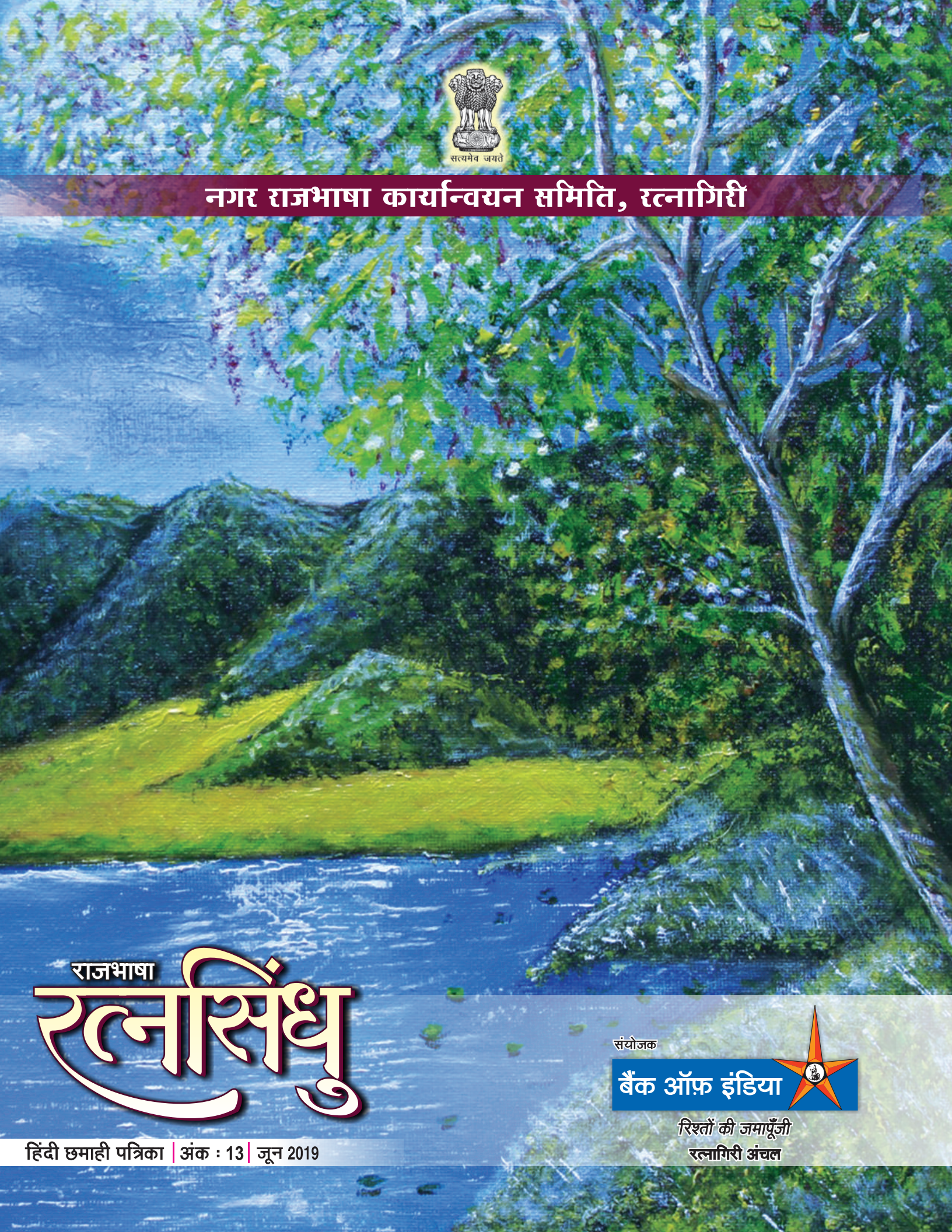

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी

राजभाषा रत्नसिंधु

हिंदी छमाही पत्रिका | अंक : 13 | जून 2019

संयोजक

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी

रत्नागिरी अंचल

वाह बच्चों ...!

कौस्तुभ नितीन नारखेडे
(बारहवी शास्त्र - 90.06%)
सुपुत्र, नितीन नारखेडे, पवन गुब्बारा वेधशाळा

समर्थ सुनील समेळ
(बारहवी शास्त्र - 70.92%)
सुपुत्र, सुनील समेळ, पवन गुब्बारा वेधशाळा

अर्शीन अब्दुल नाकाडे
(बारहवी वाणिज्य - 83.38%)
सुपुत्री, अब्दुल अजीज नाकाडे, आकाशवाणी

हिंदी कार्यशाला

भारतीय तटरक्षक अवस्थान, रत्नागिरी द्वारा सदस्य कार्यालयों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।
सदस्य सचिव रमेश गायकवाड द्वारा हिंदी के नियम, अधिनियम, राजभाषा कार्यान्वयन, तिमाही तथा छमाही रिपोर्ट प्रस्तुतिकरण और यूनिकोड अपलोड, गुगल वाईस टायपिंग के बारे में आईटी अधिकारी श्री. बिपीन विश्वकर्मा द्वारा प्रस्तुति की गई।

अध्यक्षीय संबोधन....

प्रिय साथियो,

आप सभी को सस्नेह नमस्कार तथा हार्दिक शुभकामनाएं।

आप सभी के सामने रत्नसिंधु का नवीनतम अंक रखते समय मुझे बहुत खुशी हो रही है। इस अंक में विविध रचनाओं को सम्मिलित करके विविधता में एकता लाने का प्रयास किया है। रत्नसिंधु में क्षेत्रीय भाषा को अपनाकर हमने संविधान की अष्टम अनुसूची की गरिमा बढाने तथा क्षेत्रीय भाषा का सम्मान रखने का प्रयास किया है। आपको यह पत्रिका जरुर पसंद आएगी।

मैंने हाल ही में बैंक ऑफ इंडिया, रत्नागिरी अंचल के आंचलिक प्रबंधक के रूप में पदग्रहण किया है। साथ में समिति की अध्यक्षता का भी कार्यभार संभाल रहा हूं।

समिति ने स्वयं की वेबसाइट बनाई है। समिति का स्वतंत्र कार्यालय है, सदस्य कार्यालय के स्टाफ सदस्यों के लिए अलग पुस्तकालय है, राजभाषा रत्नसिंधु हिंदी पत्रिका तथा ई पत्रिका 'प्रेरणा' भी है। मैंने यह भी पाया है कि, समिति राजभाषा में अच्छा कार्यान्वयन करनेवाले सदस्य कार्यालयों को शील्ड देकर गौरान्वित कर रही है। समिति का स्वतंत्र कार्यालय, स्वतंत्र पुस्तकालय यह तो समिति की प्रगति का आलेख है, यह बहुत ही खुशी की बात है। समिति का यह कार्य देखकर मुझे अध्यक्ष होने पर गर्व महसूस हो रहा है।

समिति की वेबसाइट का सभी सदस्य कार्यालय तथा हिंदी प्रेमी लाभ ले रहे हैं। हमारे सभी स्टाफ सदस्य हिंदी का ज्ञान रखते हैं। शैक्षिक अध्ययन के दौरान पढ़ी गई हिंदी और कामकाज के प्रयोग में प्रयुक्त राजभाषा हिंदी, इन दोनों में कोई अधिक अंतर नहीं है। कार्यालयीन कामकाज में सहजता लाने हेतु राजभाषा हिंदी का प्रयोग आवश्यक है। इसे दिल से अपनाएं।

समिति का प्रत्येक कार्य आपके सहयोग से ही सफल होगा, हम सभी समिति के कार्य से जुडे हैं तो हम सब मिलकर यह कार्य पूरी निष्ठा से अपनाएंगे और समिति को शीर्ष स्थान पर लेकर जायेंगे।

धन्यवाद सहित मंगल कामनाएं।

28 जून 2019

अतुल सातपुते

(अतुल सातपुते)
अध्यक्ष एवं उप महाप्रबंधक,
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संपादकीय....

साथियों,
आप सभी को सविनय नमस्कार

राजभाषा रत्नसिंधु छमाही पत्रिका का तेरहवां अंक आपके हाथ में सौंपते हुए बहुत हर्ष हो रहा है। इस पत्रिका को बेहत्तर बनाने का हमने प्रयास किया है। रत्नसिंधु के बारहवें अंक में सम्मिलित आलेख, काव्यपर बहुत से पाठकों ने अपनी उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं दी हैं। आपकी प्रतिक्रियाओं ने पत्रिका में विविधता लाने के लिये हमें प्रोत्साहित किया गया है। इसके लिए हम आपके आभारी हैं।

समिति हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु विविध नये-नये प्रयोग अपना रही है। समिति ने सभी कार्यालयों में हिंदी पखवाडे के साथ साथ विश्व हिंदी दिवस मनाया। विश्व हिंदी दिवस के सुअवसर पर विकलांग बच्चों के स्कूल में अनेक प्रयोगिताएं आयोजित की और रु. 5000/- की और तत्कालीन अध्यक्ष श्री. बी. वी. एस. अच्युतराव ने रु. 2000/- वित्तीय सहायता प्रदान की।

समिति की वेबसाइट बनाने के साथ-साथ सदस्य कार्यालयों से समय पर रिपोर्ट प्रस्तुति हेतु ऑनलाइन रिपोर्टिंग प्रणाली शुरू की गई है। कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। सदस्य कार्यालयों को उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु नराकास शील्ड प्रदान करके प्रोत्साहित किया जा रहा है।

इस पत्रिका में विविध विषयों को आलेख तथा रचनाओं द्वारा स्पर्श करने का प्रयास किया है। विविध तकनीकी आलेख, हस्तकलाओं से और नवोदित प्रतिभावानों को प्रस्तुत करने का प्रयास रत्नसिंधु से किया जा रहा है। हिंदी-मराठी भाषा की रचनाएं तथा काव्यों से भरा यह अंक आप सभी को पसंद आयेगा। आपके सुझावों के बिना यह पत्रिका अपना स्वरुप नहीं निखारेगी, आपके सुझावों की प्रतिक्षा में...

मंगल कामनाओं सहित धन्यवाद।

आपका,

रमेश गायकवाड
सदस्य सचिव एवं वरिष्ठ प्रबंधक

राजभाषा
रत्नसिंधु

अंतरंग

आप की राय...	1
भारतेंदु हरिश्चंद्र - आधुनिक हिंदी के जनक	3
बहुजन हिताय राजा 'छत्रपती शिवाजी'	5
सकारात्मक सोच - सफलता एक मंत्र	7
स्त्री सुरक्षा एवं सम्मान	8
पवन गुब्बारा वेधशाला, कार्यसंचालन	9
भारत की कृषि प्रणाली	10
सीबीएसई परिणामों और शिक्षा व्यवस्था	12
हिंदी और भारतीय भाषाएं	13
राष्ट्रपिता : महात्मा गांधी	16
हमारा आधुनिक डाक विभाग	18
रोजगार के क्षेत्र में हिंदी के बढ़ते कदम	19
संरक्षण - प्राकृतिक संपदाओंका	21
कार्यालय संबंधी पत्रव्यवहार	23
हिंदी प्रयोग के लिए वर्ष 2019-20 का वार्षिक कार्यक्रम	24
वरिष्ठ कार्यपालकों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली टिप्पणियाँ	26
5 जून - जागतिक पर्यावरण दिन	27
''मला आवडलेले पुस्तक - भाषण''	28
अपघात - कारण मिमांसा व उपाय योजना	30

अध्यक्ष
अतुल सातपुते
अध्यक्ष एवं उप महाप्रबंधक,
बैंक ऑफ इंडिया

संपादक
रमेश गायकवाड
सदस्य सचिव
एवं वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा,
बैंक ऑफ इंडिया

संपादन सहयोग
पुरुषोत्तम डोंगरे
आकाशवाणी

लक्ष्मीकांत भाटकर
सीमा शुल्क

सतीश रानडे
न्यू इंडिया एश्योरन्स कंपनी

संतोष पाटोळे
कोंकण रेलवे

सूरज माने
बैंक ऑफ इंडिया

विकास हेलोडे
न्यू इंडिया एश्योरन्स कंपनी

फत्तेसिंह यादव
भारतीय जीवन बीमा निगम

मुखपृष्ठ
गजानन भिसे

संपर्क कार्यालय : अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, रत्नागिरी महाराष्ट्र - 415 639.
ई-मेल - ratnasindhu10@gmail.com, वेबसाइट - http://narakasratnagiri.co.in.

• **प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार रचनाकारों के स्वयं के है। अतः यह आवश्यक नहीं की इनसे सम्पादक मण्डल सहमत हो।**

आप की राय

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग कार्यालय, महालेखाकार, राजस्थान

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका ''राजभाषा रत्नसिंधु'' के 12 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। आपकी पत्रिका हिन्दी के प्रचार प्रसार में महत्ती भूमिका निभा रही है। पत्रिका का मुद्रण एवं संकलन उत्तम है। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक एवं पठनीय हैं।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित किया गया श्री. सतिश धुरी का लेख ''भारत में सामाजिक विकास स्रोत परमाणु ऊर्जा'', सुश्री प्रिया निकेत पोकले का लेख ''स्वच्छ जल, स्वच्छ भारत'', श्री. आनंद पाल की कविता ''मातृभाषा का गौरव'' एवं श्री. सूरज महादेव माने की कविता ''दौर जज्बातों का...'' विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

- कल्याण अधिकारी

गोवा शिपयार्ड लिमिटेड

आपकी नराकास, रत्नागिरी की पत्रिका 'रत्नसिंधु' का बारहवां अंक पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। आंतरिक पृष्ठों का कलेवर, रंग आदि बेहद आकर्षित है। क्षेत्रीय कार्यान्वयन का द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करने हेतु आपको हार्दिक बधाई। वास्तव में कविताएं हमारे भावों की अभिव्यक्ति है, जो सामाजिक परिदृश्यों से अभिभूत होकर हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाती है। पत्रिका में छपे सभी आलेख भी संग्रहणीय हैं। बैंक ऑफ इंडिया के संयोजन एवं आपके कुशल नेतृत्व में हमें विश्वास है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति अपनी स्थापना के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को अवश्य प्राप्त करेगी।

सादर एवं ससम्मान।

- राजेन्द्र कुमार शर्मा, प्रबंधक (राजभाषा)

भारत संचार निगम लिमिटेड

आपके उपर्युक्त द्वारा भेजी गई रत्नागिरी टॉलिक की हिन्दी अर्द्धवार्षिक पत्रिका ''राजभाषा रत्नसिंन्धु'' 12 वें अंक की प्रति इस कार्यालय में प्राप्त हुई है। हमारी तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं।

- सचिव नराकास एवं सहायक निदेशक (रा.भा.)
बी.एस.एन.एल. कोल्लम, केरल

आयुध निर्माणी, भुसावल

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी द्वारा प्रकाशित छमाही हिन्दी पत्रिका 'राजभाषा रत्नसिंधु' के 12 वें अंक का अवलोकन करते हुए खुशी हुई।

'राजभाषा रत्नसिंधु' का मुख पृष्ठ व कलेवर अत्यंत सुन्दर व आकर्षक है। इसमें प्रकाशित सभी लेख एवं रचनाएँ रोचक, ज्ञानवर्धक व उपयोगी हैं। लेखों में 'भारत में सामाजिक विकास स्रोत परमाणु ऊजा', 'स्वच्छ जल, स्वच्छ भारत', 'कार्मिक मनोविज्ञान', 'भारती संस्कृति में यात्राओं का महत्व' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

'राजभाषा रत्नसिंधु' ज्ञानवर्धक व संकलन योग्य लेखों के माध्यम से हिन्दी के रचनात्मक प्रचार-प्रसार में अपनी सफल भूमिका का निर्वाह कर रही है। इसके उत्कृष्ट सम्पादन व प्रकाशन से जुडे सभी कर्मियों को शुभकामनाएँ।

- अ. कृ. देशमुख, कार्य प्रबन्धक एवं सदस्य सचिव,
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुसावल

महासर्वेक्षक का कार्यालय, देहरादून

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका ''रत्नसिंधु'' अंक-12, वर्ष2018 प्राप्त हुआ, धन्यवाद। पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिन्दी के उन्नयन तथा विकास के लिए किया जा रहा प्रशंसनीय प्रयास है। पत्रिका का मुख पृष्ठ संस्कृति की अनुपम छटा बिखेरता हुआ, इतिहास को दर्शाता हुआ आकर्षक एवं मनमोहक है। पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचनाएं, आदि बहुत रोचक और ज्ञानवर्धक हैं। कार्यालय की गतिविधियों के चित्र पत्रिका का आकर्षण और भी बढा रहे हैं।

प्रकाशन से जुडे समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों एवं सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं आगामी अंक के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

- मोहन राम, अधीक्षक सर्वेक्षक प्रभारी एवं
सदस्य सचिव, नराकास (कार्यालय-1) देहरादून।

युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया

हमें आपके नराकास की गृह पत्रिका के उपर्युक्त अंक (नवंबर-2018) को पढकर अत्यंत खुशी हो रही है। सुंदर कलेवर वाली इस पत्रिका में विविध विषयक सामग्रियों का सुनियोजित ढंग से समायोजन किया गया है, जो कि सराहनीय है।

उक्त अंक की रचनाएँ काफी रुचिकर, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के उत्कृष्ट सम्पादन हेतु सुधी संपादक मंडल को साधुवाद एवं बधाई।

- मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

आप की राय

भारत सरकार गृह मंत्रालय महानिदेशालय असम राइफल्स

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका ''रत्नसिंधु'' के 12 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। इस पत्रिका की समस्त रचनाएं मार्गदर्शी एवं पथ प्रदर्शक है लेकिन 'भारत में सामाजिक विकास', 'बच्चे ईश्वर का एक हसीन वरदान' एवं हिंदी साहित्य में पत्र-पत्रिकाओं के विशेषांकों की प्रासंगिकता एवं उपादेयता' बहुत ही उल्लेखनीय कृति लगी। इस सराहनीय संपादन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

मैं यह भी कामना करता हूँ कि, पत्रिका में और भी उत्कृष्ट रचनायें पकाशित होती रहेंगी।

- जोसफ एंटनी. सी. ले. कर्नल, जीएसओ-1 (शिक्षा)
एवं सचिव, नराकास कृते अध्यक्ष, नराकास, शिलांग

कार्यालय नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल

आपके नराकास कार्यालय से ''राजभाषा रत्नसिंधु'' पत्रिका (अंक 12, नवंबर 2018) की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका के उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए नराकास करनाल के पदाधिकारियों व सदस्य कार्यालयों की ओर से आपको एवं आपके मार्गदर्शन में कार्य करने वाले समिति के सदस्य सचिव व संपादक मंडली को बधाई एवं शुभकामनाएं सम्प्रेषित करते हुए हमें गर्व हो रहा है। पत्रिका की सभी रचनाएं अच्छी लगीं। विशेष रूप से ''भारत में सामाजिक विकास स्रोत परमाणु द्वारा सतीश धुरी'', ''कर्ज जिंदगी का द्वारा निलेश श्रावणजी बारई'', ''मातृभाषा का गौरव द्वारा आनंद पाल'' एवं ''बीते लम्हे द्वारा अभिषेक रंजन'' सराहनीय हैं। नगरस्तरीय प्रतियोगिताओं की सचित्र जानकारी अनुकरणीय है।

आपकी समिति की उपरोक्त पत्रिका का विन्यास, साज-सज्जा, इसकी सामग्री की गुणवत्ता, मुद्रण स्तर आदि भी सराहनीय है।

राकेश कुमार कुशवाहा,
सदस्य सचिव, नराकास, करनाल

भारत डायनामिक्स लिमिटेड

रत्नागिरी की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की गृह पत्रिका ''राजभाषा रत्नसिंधु'' का 12 वाँ अंक प्राप्त हुआ। सुव्यवस्थित, रंगीन व आकर्षक पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई।

पत्रिका के माध्यम से सदस्य कार्यालयों में संपन्न राजभाषा संबंधी गतिविधियों की जानकारी मिली।साथ ही, भारतीय संस्कृति में यात्राओं का महत्व, स्वच्छता अभियान, बच्चे ईश्वर का एक हसीन वरदान, स्वच्छ जल, स्वच्छ भारत और भारत सपनों का। शीर्षक लेख और अन्य कविताएँ भी पठनीय हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर विकास की शुभकामनाओं सहित,

होमनिधि शर्मा, उप महाप्रबंधक (का. एवं प्रशा-राजभाषा)
एवं सचिव नराकास (उ.) हैदराबाद-सिकंदराबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) वडोदरा

नराकास की पत्रिका राजभाषा रत्नसिंधु का नवीन अंक सधन्यवाद प्राप्त हुआ। आभार।

पत्रिका का मुखपृष्ठ एवं धार्मिकता को समर्पित है। पत्रिका में प्रकाशित संदेश, लेख, कहानियाँ / कविताएँ संग्रहणीय एवं उपयोगी हैं। कार्यालयों में राजभाषिक गतिविधियों का सचित्र विवरण को रेखांकित करने का स्तुत्य प्रयास किया है।

संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

- शिखा जैन, सहायक हिंदी अधिकारी एवं सदस्य सचिव

भारत सरकार, आयकर विभाग

आपकी समिति की पत्रिका 'रत्नसिंधु' के 12 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा आकर्षक है। समिति के विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी व विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती पत्रिका ज्ञानवर्धक व रोचक है। पत्रिका में समाहित सभी सामग्री सूचनाप्रद व उपयोगी है। विभिन्न गतविधियों कें छायाचित्रों के समावेश से पत्रिका की शोभा में वृद्धि हुई है।

आशा है कि यह पत्रिका समिति के सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करेगी और अभिव्यक्ती का सार्थक मंच उपलब्ध करवाती रहेगी।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

संगीता वशिष्ठ, सहायक निदेशक (रा.भा.)
एवं सचिव, नराकास, चण्डीगढ।

कार्यालय प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, ओडिशा

आपके पत्र सं. नराकास/रहगा/1240-1739 दिनांक 28.11.2018 के साथ ''रत्नसिंधु'' के 12 वे अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका भेजने के लिए हार्दिक धन्यवाद।

सांस्कृतिक झलकियों के साथ धर्म निरपेक्षता को दर्शाता पत्रिका का मुखपृष्ठ चित्ताकर्षक बन पडा है। इसमें प्रकाशित रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी है। नराकास, रत्नागिरी द्वारा मनाए गए विभिन्न समारोहों की झलकियों से राजभाषा के प्रयोग एवं प्रसार की झलक स्पष्ट दिखाई देती है।

अच्छी एवं उत्तम पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी ओर से बधाई एवं आगामी अंक के लिए मेरी शुभकामनाएं।

- अरिजीत चक्रबर्ती, आयकर सहायक आयुक्त (मु.)
(प्रशा. व सत.) / हिंदी प्रभारी कार्यालय प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, भुवनेश्वर

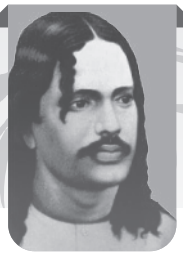

भारतेंदु हरिश्चंद्र – आधुनिक हिंदी के जनक

भारतेंदु हरिश्चंद्र को हिंदी साहित्य, काव्य, नाटक के क्षेत्र में पुरोगामी के रुप में लेना होगा। उनका कार्यकाल ऐसे समय रहा है। जब अंग्रेजों का शासन स्थापित हो गया था। 1857 का स्वतंत्रता संग्राम बुरी तरह असफल हो चुका था। पुनर्जागरण के ऐसे समय में जब देश, समाज एक ओर अपनी धर्मांधता, रुढ़िवादिता, साहित्य की समाजविमुख परंपरा से लड़ने के लिए तैयार हो रहा हो तथा दुसरी ओर साम्राज्यवादी, आक्रमणकारी शक्तियों से मुकाबला करने के लिए भी तैयार होना चाहता हो, तो किसी भी रचनाकार को गहरे आत्मसंघर्ष, अन्तर्विरोधों को अपनी रचना प्रक्रिया का अंग बनाकर सृजन के धारतल पर ले आता है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म वाराणसी के एक सम्पन्न परिवार में वर्ष 1850 में हुआ था। इनके पिता का नाम गोपाल चंद्र और माँ का ना पार्वती था। इनके पिता ब्रजभाषा में गिरिधरदास के नाम से कविता करते थे। जब ये पाँच वर्ष के थे, तब माँ का और तेरह वर्ष की आयु में उनकी पिता का भी देहांत हो गया था। साहित्य के संस्कार भारतेंदु को बचपन से ही घर पर लगने वाली साहित्यिक मजलिसों से प्राप्त होने लगे थे। हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी भाषा की अधिकांश शिक्षा भी उनकी घर पर ही संपन्न हुई। कुछ समय तक काशी के क्वीन्स कालेज में भी उन्होंने अध्ययन किया। हरिश्चंद्र के प्रखर व्यक्तित्व और साहित्यिक अवदान से प्रेरित होकर 1880 में 'सार-सुधानिधि' पत्रिका में साहित्यकारों ने इन्हें 'भारतेंदु' की उपाधि से अलंकृत किया। तभी से उन्हें भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाम से पहचाना जाने लगा।

भारतेंदु ने हिंदी में साहित्यिक पत्रकारिता पा सूत्रपात किया जिससे हिंदी भाषा और उसके साहित्य प्रचार-प्रसार में पर्याप्त सहायता मिली। 1868 में इन्होंने 'कवि वचन सुधा' और 1873 में 'हरिश्चंद्र मैगजीन' पत्रिका निकाली। इसके बाद 1884 में नारी शिक्षा हेतु 'बाला बोधिनी' पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया। उनकी उदारता, लगन और साहित्यिक नेतृत्व की क्षमता से प्रभावित होकर हिंदी साहित्यकारों का एक मंडल भी उनके आस-पास तैयार हो गया। जिसे भारतेंदु मंडल के नाम से जाना जाता है। इसमें पं. बद्री नारायण चौधरी 'प्रेमधन', पं. प्रताप नारायण मिश्र, पं. बालकृष्ण भट्ट, पं. अम्बिकादत्त व्यास, पं. राधाचरण गोस्वामी, ठाकुर जगमोहन सिंह, लाला श्रीनिवास दास के नाम उल्लेखनीय हैं।

पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हुए भारतेंदु ने अपने लगभग बीस वर्षों के छोटे से रचनाकाल में छोटे-बडे 175 ग्रंथों की रचना की थी।

भारतेंदु की काव्य-रचना उनकी भक्ति भावना की प्रमुखता के बावजूद श्रृंगार, राजभक्ति और देशभक्ति की भावना से अवगत कराता है। इनकी भक्ति संबंधी रचनाएँ कृष्ण भक्त कवियों की परम्परा को ही पुनर्जीवित करती है। श्रृंगार के संयोग-वियोग चित्रण में रीतिकालीन मनोवृत्तियां की झलक मिलती है।

भारतेंदु ने तत्कालिन अंग्रेजी शासन से संबंधित राजभक्ति संबंधी कविताएँ भी लिखी जिसमें महारानी विक्टोरिया के प्रति आदर, एलबर्ट की मृत्यु पर शोक, ड्यूक ऑफ एडिनबरा के भारत आगमन पर उनका स्वागत, लॉर्ड रिपन की प्रशंसा में 'रिपनाष्टक', अंग्रेजों की मिश्र विजय पर 'विजयिनी विजय पताका' आदि रचनाएँ उल्लेखनीय है। इसके पिछे यही कारण था कि अंग्रेजी शासन भारतीयों का विकास करेगा, लेकिन उनका भ्रमनिरास ही हुआ। इसके पश्चात भी उनकी देशभक्ति संबंधी रचनाएँ अधिक महत्वपूर्ण हैं। वे कहते है :

अंग्रेज राज सुख-साज राज्यों है भारी,
पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।

भारतेंदु ने ब्रिटिश शासन की व्यावसायिक वृत्ति को भारत की दुर्दशा का कारण भी माना है। स्वदेशी का समर्थन करते हुए वे कहते है :

धन विदेश चलि जात तऊ जिय होत न चंचल।
जड समान है रहत अकिलहत रचत सकल कल।।

'हिंदी वर्धिनी सभा' में स्वभाषा पर अपने काव्य भाषण में उन्होंने स्पष्ट रूप से अपने भाषा प्रेम और उसके महत्व को इस प्रकार रेखांकित किया है:

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न ऊर को सूल।।
पढ़ो-लिखों कोई लाख विधि भाषा बहुत प्रकार।
पै जब कछु सोचिहो निज भाषा अनुसार।
निज भाषा निज धरम निज मान, करम यौहार।
सबै बढ़ावहु बेगि मिलि, कहत पुकार-पुकार।।

भारतेंदु की स्वदेशी संबंधी अवधारणा, विशेष रुप से स्वभाषा संबंधी निष्कर्ष अत्यंत वैज्ञानिक और सार्थक हैं। चाहे कोई कितनी भी भाषा का अध्ययन कर लें, लेकिन जब वह सोचने-समझने, या चिंतन करने लगता है तो यह कार्य अपनी मातृभाषा में ही संपन्न होता है। इसी वास्तविकता को ध्यान में रखकर भारतेंदु ने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अपने साहित्य, अपनी पत्रिकाओं, अपने नाटकों द्वारा जो व्यापक अभियान चलाया था, वह अविस्मरणीय है। यह अभियान उनकी नवजागरण की चेतना से ओत-प्रोत होकर एक व्यापक समाज-सुधार का अभिन्न अंग रहा है। अपनें नाटकों, मुकरियों (पहेलियाँ), निबंधों समसामयिक समस्याओं से सम्बद्ध टिप्पणियों आदि के द्वारा भारतेंदु ने जो व्यापक सुधार आंदोलन छेड़ा था, उसमें हिंदी भाषा की विशेष भूमिका थी।

उनके साहित्य की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि, उनकी शैली व्यंगात्मक रही है। उनके गद्य साहित्य में उन्होंने व्यग का अत्यंत सहज और सार्थक किया है। धार्मिक पाखण्ड, बाल विवाह, विधवा विवाह,

रुढ़िवादी रीति-नीति, छुआ-छूत, जाति-पाँत को लेकर उनके व्यंग सार्थक सामाजिक भूमिका का निर्वाह करते हैं।

उनकी काव्य भाषा यद्यपि ब्रजभाषा है। लेकिन गद्य की भाषा में हिंदी खड़ी बोली के व्यावहारिक रुप को ही उन्होंने महत्व दिया है। इसीलिए उन्होंने राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद के उर्दु प्रेम और राजा लक्ष्मणसिंह के संस्कृत निष्ठ भाषा प्रेम का विरोध करते हुए सभी लोगों के बीच प्रचलित भाषा को हिंदी की जातीय भाषा के रुप में स्वीकार किया।

आधुनिक हिंदी कविता का प्रारंभ उन्नीसवीं सदी में भारतेंदु हरिश्चंद्र से माना जाता है। इससे पूर्व रीतिकाव्य के नाम से जाना जाने वाला काव्य मात्र दरबारों में, राजाओं और मनसबदारों की चाटुकारिता में, स्तुति में ही समाहित था। उसमें सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चिंताओं के कोई संदर्भ नही होते थें। भारतेंदु ने इस काव्य की दिशा ही बदल दी।

'अंधेर नगरी' जैसे व्यंगात्मक नाटक के द्वारा उन्होंने तत्कालिन शासन व प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार को बखुबी प्रस्तुत किया है जो आज की शासन व्यवस्था पर भी प्रासंगिक है। भारतेंदु को आधुनिक नाटकों के जन्मदाता के रुप में जाना जाता है। उनके युग में ही हिंदी के आधुनिक युग की शुरुआत होती है। नौकरशाही की आलोचना करते हुए उन्होंने रिश्वतखोरी, जनता के प्रति विद्वेष और उत्पीड़न की नीति, टैक्स लगाकर जीवन को मुश्किल बनाना आदि को 'अंधेरा नगरी' नाटक में खूबी से प्रस्तुत किया है। 'जना जोर गरम' बेचनेवाला 'घासीराम' कहता है :

चना हाकिम सब जो खाते।
सब पर दुना टिकस लगाते।

चूरन बेचने वाला 'पाचक वाला' कहता है :

चूरन अमले सब जौ खावैं। दूनी रुशवत तुरत पचावैं।
चूरन साहब लोग जो खाता। सारा हिंद हजम कर जाता।
चूरन पुलिस वाले खाते। सब कानून हजम कर जाते।

ऐसे महान विभूति का निधन 25 जनवरी 1885 में मात्र 35 वर्ष की अल्पायु में हो गया। लेकिन उनका साहित्य, काव्य तथा रचनाएँ हजारों वर्ष जीवित रहेगी इसमें कोई शंका नही है। शायद इसी रूप से भारतेंदु हिंदी साहित्य रचनाओं में चिरायू ही माने जाएंगे

डॉ. रवि गिरहे
बैंक ऑफ इंड़िया

सरस्वती वंदना

हंसवाहिनी जगत व्यापिनी पूर्ण करो अरमान को ।
मन रखा है अब चरणों में तेरे ही गुण गान को ।।
अमृत भर दे वाणी में तू कष्ट मुक्त जीवन कर दें।
हदय पटल हो स्वच्छ सभी का वरद हस्त सिर पर धर दें।।
दूर अंधेरा जग से कर दे उजियारे की श्याम हो।
मन रखा है अब चरणों में तेरे ही गुण गान को।।
बुद्धीदात्री दे दे बुद्धी और ज्ञान से भर दे झोली।
स्मरण करे सदा तेरा ही ऐसा सिखला दे बोली।।
झुके हमारा शीर्ष सदा ही अब तेरे सम्मान को ।
मन रखा है अब चरणों में तेरे ही गुण ।।
हिंद महासागर से गहरी माता तेरी वाणी है ।
हिमगिरि से ऊँचा गौरव है माता तू कल्याणी है ।।
हर मानव को मिले ऊर्जा जीवन के निर्माण को ।
मन रखा है अब चरणों में तेरे ही गुण गान को ।।
तू ही माता सरस्वती है और शारदा तुझे कहें।
तू ही हो भारत माता है जय जय तेरी सभी कहें ।।
अब सबके मन उत्तेजीत हो भारत के अभिमान को ।
मन रखा है अब चरणों में तेरे ही गुण गान को।।

श्री. मेघानंद गुप्ता
पिता वैभव गुप्ता,
बैंक ऑफ इंड़िया
आंचलिक कार्यालय

बहुजन हिताय राजा 'छत्रपती शिवाजी'

भारतवर्ष में राजाओं की परंपरा पुरानकालों से देखी जा सकती है। विरासत में मिली राजगद्दी को संभालने और व्यक्तिगत स्वार्थ तथा ईर्ष्याबोध से राज्य की वृद्धि में अनेक राजाओं ने अपने जीवन को समाप्त किया । इतिहास के कुछ पन्नों पर अपना नाम दर्ज कराकर वे सदा के लिए इतिहास का अंग बन गए। भारत में मध्ययुगीन काल में जब चारों ओर यवनों का आधिपत्य स्थापित हो चुका था और भारतवर्ष के क्षत्रिय यवनों द्वारा प्राप्त जागीर पर अपने आपको धन्य मानते थे और यवनों के सत्ताविकास के लिए अपनों पर ही तलवार उठाते थे ऐसे देश धर्म से च्यूत हो चुके काल में बीजापुर के सुलतान के जागीरदार शाहज़ी भोसले के घर में 'शिवाजी' नामक बालक ने जन्म लिया। लेखक मनु शर्मा ने इसी इतिहास पुरुष शिवाजी के पौरुष और धर्मपरायणता को लेकर उनके जीवनकार्य को प्रकट करनेवाले उपन्यास 'वीर शिवाजी' की रचना की। जन्म पूर्व काल की स्थितियाँ कुछ ऐसी बनी की माँ जीजाबाई को अपने पिता के किले पर बंदी बनाकर रखा गया। शायद अभिमन्यू के समान शिवाजी ने गर्भावस्था में ही दासतामुक्ति के पाठ पढ़े हो। राजनीतिक वातावरण और राजनीतिक चालें तो वे बचपन से ही अनुभव कर रहे थे। जीजाबाई जैसी वीरांगना के संस्कारों ने शिवाजी को अन्याय के सामने झुकना कभी शिखाया नहीं इसलिए अपने पिता शाहजी के साथ बीजापुर दरबार में जाने के बाद भी उन्होंने सुलतान को शाही सलाम नहीं किया। राजमार्ग पर होनेवाले गोहत्या को बंद करने के लिए मजबूर किया।

माँ जीजाबाई और दादोजी कोंडदेव की छत्रछाया में शिवाजी नीति के पाठ सीखते गए। दादोजी राजकार्य में शिवाजी को अपने साथ रखते। जिससे उनकी राज-काज की समझ समय के पहले ही बढ गई थी। शिवाजी ने दादोजी कोंडदेव के साथियों के पुत्रों से गहरी दोस्ती बनाकर उनकी सहायता से स्वराज्य की नीव डाली। येसाजी कंक, तानाजी मालुसरे, नेताजी पालकर की सहायता से तोरणा किला हासिल किया। उसकी मरम्मत कराई। उसी किले के नजदीक रायगड किले का निर्माण किया। शुरू में दादोजी कोंडदेव की सुलतान और शाहजी के प्रति इमानदारी ने इसका विरोध किया परंतु बाद में शिवाजी को प्रोत्साहित करते हुए वे कहते है, "बेटा, तू बडा योग्य है। मुझे विश्वास है कि तू एक न एक दिन अवश्य हम लोगों का नाम अमर करेगा। माता, धरती माता तथा गऊ माता की सदा सेवा करना। अपनी माता की सेवा में प्राणों तक का उत्सर्ग करने पडे तो पीछे मत हटना। यही सच्चे पुत्र का धर्म है। (पृ. 46) शिवाजी ने एक एक करके शाहजी की पुरी जागीर पर अधिकार जमा लिया। बीजापुर के सुलतान ने शिवाजी को सबक सीखाने के लिए और किले वापस पाने के लिए बाजी घोरपडे के माध्यम से शाहजी को बंदी बनाकर शिवाजी से किलों की माँग की परंतु शिवाजी ने प्रजाहित में प्राप्त किए प्रांत को व्यक्तिगत हित (पिता शाहजी को छुडाने) के लिए सुलतान को लौटाना ठीक नहीं समझा। शिवाजी ने कूटनीति करके मुगलों से संधि करके पिताजी को मुक्त कराया और प्रजाहित को ठेस भी पहुँचने नहीं दी।

शिवाजी की कर्तव्यदक्षता में बदले की भावना कोई महत्त्व नहीं था। शाहजी द्वारा बाजी घोरपडे के छल का बदला लेनेवाला पत्र प्राप्त होने पर भी शिवाजी ने बाजी के प्रति कोई कार्रवाई नहीं की। कुछ वर्षो पश्चात बीजापुर के आदिलशाह के कहने पर इखलास खाँ, खवास खाँ, बाजी घोरपडे और व्यंकोजी भोसले (शिवाजी के सौतेले भाई) ने सामुहिक आक्रमण की योजना बनाई तब शिवाजी नें अपने बचाव में मुधोल पर आक्रमण किया। जिसमें बाजी घोरपडे मारे गए। मुधोल से लौटते समय बाजीपुत्र मालोजी को पुश्तैनी दुश्मनी भुलने संबंधी सलाह दी। खवास खाँ को खानापूर में पराभूत किया। भाई व्यंकोजी के साथ युद्ध न करने की नीति का समर्थन करते हुए शिवाजी नेताजी से कहते है, "मैं अपने भाई पर आक्रमण करके जघन्य पाप नही करना चाहता। यदि उसने चढाई की तो लाचार होकर सामना करना ही पडेगा। तुम जिसे शत्रु समझते हो मैं उसे पथभ्रष्ट भाई समझता हूँ।" (पृ. 144) शिवाजी ने इसी नीति के कारण मातृद्रोह करनेवाले औरंगजेब का साथ नहीं दिया।

बीजापुर की राजमाता ने शिवाजी की दमन करने के लिए दस हजार सैनिकों के साथ अफजल खाँ को भेज दिया। वह उत्पात मचाता हुआ निरंतर आगे बढ रहा था। उसके उत्पात से जनता में हाहाकार मचा था। साथ ही शिवाजी भी चिंतातूर हो गए थे लेकिन स्वतंत्र राष्ट्र के अस्तित्व के लिए अपने साथियों को समझाते हुए कहते है, "मुझे इस समय भावुक नहीं बनना है। भविष्य को हर पहलु से देखना है, क्योंकि आज की अदूरदर्शिता कल हमारे देश और जाति के लिए घातक हो जाएगी। मेरे न रहने पर उद्देश्य की पूर्ति का भार आप सब पर होगा। इसे मत भूलिएगा। जिस किसी को भी नेता चुनिएगा, उसकी आज्ञा का पालन वैसे ही कीजिएगा जैसे आप मेरी आज्ञाओं का पालन करते है।" (पृ. 104) शिवाजी ने पुरी रणनीति बनाकर अपनी जान जोखिम में डालकर अफजल खाँ से भेट ली लेकिन उनसे जैसे ही दगा दिया उसपर पलटवार करके उसे मार डाला। इस युद्ध में जितने भी सैनिक कैदी बनाए गए, सबको शिवाजी ने बिना चोट पहुँचाए छोड दिया क्योंकि शिवाजी की लड़ाई व्यक्ति से नहीं विचारों से थी। शिवाजी की ओर से लड़ते हुए जो मराठा सैनिक मारे गए थे, उनकी विधवाओं को पेन्शन दिए गए। यह पुरस्कार सौ रुपये लेकर आठसौ रुपये तक था।' (पृ. 113)

शिवाजी अपनी सेना का विशेष ध्यान रखते थे। ये राष्ट्र के आधार होने के साथ साथ उनपर उनकी पारिवारिक जिम्मेदारियां भी थी। इसलिए शिवाजी ऐसी युद्धनीति बनाते जिसमें कम-से-कम जान की जोखिम हो। इसलिए उन्होंने खुले में युद्ध करने के बजाय छुपकर युद्ध करने की नीति अपनाई थी। पन्हाला के घेरे को तोडकर जब विशालगड की ओर भागें तब फजल खाँ उनका पीछा करता हुआ निकट पहुँचा तब शिवाजी के साथ बाजीप्रभू देशपांडे ने शिवाजी को आगे निकल जाने और खुद को अन्य

सैनिकों के साथ शत्रु पक्ष को रोके रखने के लिए रुकने की बात कही। उसका विरोध करते हुए शिवाजी ने कहा, ''मैं यह नहीं चाहता की मैं भाग जाऊँ और तुम सब मर जाओ। इस बलिदान के पवित्र महायज्ञ में मैं भी अपनी आहुति देकर भाग्यवान बनना चाहता हूँ।'' (पृ. 119) बाजीप्रभु ने इस बात को नकारते हुए और प्रजाहितैषी शिवाजी की महत्ता को अधोरेखित करते हुए कहा, ''हम लोगों के मर जाने पर भी यदि आप जीवित रहेंगे तो हमारे जैसे लाखों तैयार हो जाएँगे, किंतु आपको खोने पर हमें दूसरा शिवाजी नहीं मिलेगा।'' (पृ. 119) शिवाजी ने हमेशा ऐसी युद्धनीति अपनाई जिसमें युद्ध ही न करना पडे या बहुत कम सैन्यहानी हो। बाजी श्यामराजे, अफजल खाँ, शायस्ता खाँ आदि लोगों पर किए गए हमलो में अपनी जान जोखिम में डालकर सैन्यहानी होने से बचाई थी। इसीलिए तो तत्कालीन काल के शासक शिवाजी को जादूगर मानते थे। युद्ध होतेही शिवाजी की जीत हो जाती। विरोधी की बडी से बडी सेना देखते रह जाती और शिवाजी सब पर हावी हो जाते।

वास्तव में शिवाजी युद्ध विरोधी थे। उन्होंने स्वजनों पर कभी भी अपनी ओर से तलवार नहीं उठाई। उनकी तलवार राष्ट्रहित में यवनों के विरोध में ही उठी। सभी राष्ट्र पुतों के साथ उन्होंने सामंजस्य बनाए रखने की कोशिश की। यशवंत सिंह, मिर्जाराजा जयसिंह को भी राष्ट्रप्रेम का पाठ पढाया। मिर्जाराजा जयसिंह को अपनी गुलामी की याद दिलाते हुए शिवाजी कहते है, ''देशभक्त की असफलता पर भविष्य की आँखे आँसुओं अर्ध्य चढाती है, किंतु दास की सफलता पर भी उनमें घृणा के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता। मुगल शासन का बोझ अपने कंधे पर उठाने से अच्छा होता कि, मातृभूमि का बोझ आप अपने कंधे पर उठाते ।'' (पृ. 161) स्वतंत्र राष्ट्र की रक्षा के लिए उन्होंने मुगलों से पुरंदर में संधि की। अपनी जान जोखिम में डालकर औरंगजेब से मिलने गए लेकिन जाने से पहले ऐसी व्यवस्था बना गए कि उनके जिवित वापस न लौटने पर भी राष्ट्रसेवा का कार्य आगे बढता रहे। अंग्रेजो के विरुद्ध उन्होंने दूरदर्शिता का परिचय देकर अपनी जलशक्ति बढाई जिससे उनके शासन काल में उनके राज्य में उनके पाँव पसर न पाए। यही दूरदर्शिता भारतवर्ष के परवर्ती शासक दिखाते तो भारत कभी भी अंग्रजों का गुलाम न बनता।

शिवाजी महाराज की शासन व्यवस्था सामान्य लोगों के हितों को समर्पित थी। आग्रा से लौटते समय एक सामान्य स्त्री द्वारा लूट की शिकायत करने पर उसे उसकी लूट के कई गुना अधिक धन दिलाया। गोलकुंडा यात्रा में सैनिकों को सक्त हिदायत थी कि, सामान्य लोगों तथा किसानों को न सताया जाए। शिवाजी महाराज की सत्ता का केंद्रबिंदू सामान्य व्यक्ति होने से उन्हें जनसमर्थन प्राप्त था। शिवाजी के राज्याभिषेक का यही मूल कारण था। सामान्य लोगों के सामने दोहरे लगान की समस्या थी क्योंकि मुगल और आदिलशाह उन्हें राजा नहीं मानते थे। जनता दुविधा में रहती कि अपना लगान किसे दें। जनता को उसका स्थायी उत्तर मिलें व दोनों ओर से लुटी न जाए। साथ ही शिवाजी द्वारा स्थापित शासन व्यवस्था जनता के प्रति उत्तरदायित्व स्वीकारें आदि कारणों से उन्होंने राज्यभिषेक कराया।

स्त्रियों के प्रति शिवाजी का दृष्टिकोन सदा ही सम्मानजनक रहा है। आबाजी सोनदेव ने कल्याण लूट केसाथ अनजाने में कल्याण किलाध्यक्ष की बहू उठा लाई। इस भूल को स्वीकारते हुए उसे सम्मान के साथ बीजापुर पहुँचाया गया और अपने साथियों को समझाते हुए कहा, ''हमें ऐसी घटनाओं से बचना चाहिए। हमें दूसरे के घर की महिलाओं का उतना ही सम्मान करना चाहिए जितना हम अपने घर की महिलाओं का करते हैं।'' (पृ. 54) शिवाजी के कर्नाटक मुहिम में भी बेलबाडी में सावित्रीबाई नामक पटेलिन ने शिवाजी के आक्रमण का डटकर मुकाबला किया। शिवाजी के साखुजी गायकवाड नामक सैनिक ने उसे धोके से पकडा और बेइज्जत किया। सावित्रीबाई को शिवाजी के सामने लाया गया तब सावित्रीबाई के रौद्र रूप ने सारी कहानी बताई। शिवाजी ने संकोचते हुए उसे कहा, ''मेरा सिर अपने पापों के कारण लज्जा से झुक गया है। तुम्हारे साथ जिसने ऐसा व्यवहार किया, वह सचमुच नीच है। पाप ने उसे अंधा बना दिया है और मैं उसे सदा के लिए अंधा बना दूँगा।'' (पृ. 230) शिवाजी का न्याय सबके लिए समान था। इसीलिए अपने पुत्र शंभुजी द्वारा एक स्त्री पर किए गए अत्याचार पर उनकी प्रतिक्रिया बडी तीव्र थी। ''यदि किसी और ने ऐसा अपराध किया होता तो मैं उसे प्राणदंड देता, किंतु जब मेरे पुत्र ने ऐसा अपराध किया तो मैं उसे प्राणदंड से कठोर दंड दूँगा। आज पुरा महाराष्ट्र देख ले कि, पाप का प्रायश्चित कितना कठोर होता है। इतिहास शिवाजी के इस न्याय को कभी न भूले।'' (पृ. 231)

शिवाजी की न्यायप्रियता, कर्तव्यदक्षता, जातिगत स्वाभिमान, राष्ट्रप्रेम, निडरता आदि गुणों ने उन्हें सामान्य राजाओं की श्रेणी से कई ऊँचा स्थान प्राप्त कर दिया। वे देश की विशेषता महाराष्ट्र की जनता के हृदयसिंहासन पर आज भी विराजमान है। लोग उन्हें देवताओं की तरह पूजते है। बच्चे, युवाओं के वे हमेशा आदर्श रहें। उनके नाम का जयघोष सोए हुए लोगों में भी जोश भर देता है। ऐसे महान व्यक्तित्व की बारिकियों को लेखक मनु शर्माजी ने सजीव इतिहास के साथ संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है। लोग वीर शिवाजी के कार्य को युगो-युगों तक याद करते रहेंगे।

प्रा. सचिन मदन जाधव,
सद्गुरू गाडगे महाराज कॉलेज,
कराड (सातारा)

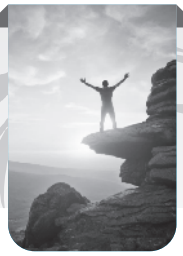

सकारात्मक सोच सफलता का मंत्र

जीवन में प्रत्येक व्यक्ति सफल होना चाहता है और आगे बढना चाहता है, किंतु वह कहां तक सफल हो पाता है, यह उसके संघर्ष, परिश्रम और प्रयासों पर निर्भर करता है। जीवन में दुःख, कठिनाई, समस्याएं, बाधाएं, प्रतिकूलताएं और चुनौतियां तो आती रहेंगी, किंतु इतिहास गवा है, जीवन में सफलता उन्हीं को प्राप्त हुई है जिन्होंने इनको स्वीकार करके हिम्मत से इनका सामना किया और संघर्ष करते हुए इन पर विजय प्राप्त की। उनकी सकारात्मक सोच ही उनके सफलता का कारण बनी है।

हमारे जीवन में सोच का बहुत महत्व होता है। जब हमारी सोच सही होती है या जब हम सकारात्मक सोचते है तब हमारे सारे काम भी सही तरीके से पूरे हो जाते है। जिस व्यक्ति की सोच नकारात्मक होती है वह हर चीज में नेगेटिव जीचे ढूंढने लगता है जिससे उस व्यक्ति के हर काम सही नहीं हो पाते। वही सकारात्मक सोच रखने से हम सिर्फ अच्छाई खोजते है और जब हमारी सोच सकारात्मक बन जाती है तो उसके परिणाम भी सकारात्मक आने लगते है।

यह सोच का अंतर है होता है जहाँ कोई विद्यार्थी कक्षा में किसी कारण अच्छे नंबर ले आता है तो कोई छात्र कक्षा में फैल हो जाता है। अगर आपको अपने जीवन में कुछ भी कामयाबी पानी है तो आपको आज से ही अपनी सोच सकारात्मक बनानी होगी ।

सकारात्मक नजरियां आपकी सभी समस्याओं को हल नहीं कर सकता लेकिन यह लोगो को हिलाने के लिए काफी होता है, एक बार जब आप नकारात्मक विचारों को सकारात्मक विचारों में बदल देते हो, तब आपको सकारात्मक नतीजे मिलने शुरू हो जाते है।

सकारात्मक विचार एवं नकारात्मक विचार बीज की तरह होते है जिन्हें हम दिमागी रूपी जमीन में बोते हैं जो आगे चलकर हमारे दृष्टिकोण एवं व्यवहार रूपी पेड का निर्धारण करता है। एक तरफ नकारात्मक विचार हमें घोर अंधकार में धकेल सकते हैं वहीं दूसरी तरफ सकारात्मक सोच हमें हमें असफलता के अंधकार से निकाल सकती है।

सकारात्मक सोच का एक अनुपम उदाहरण सफल वैज्ञानिक थॉमस एल्वा एडिसन के रूप में हमारे समक्ष है। उनके बचपन में उनके हाथ में एक कागज का टुकडा था जो उन्हें स्कूल में दिया गया था। उन्होंने अपनी माँ को बताया ''मेरे शिक्षक ने यह कागज दिया है और कहाँ है कि इसे अपनी माँ को ही देना''। उन्होंने यह भी बताया कि उसके शिक्षक ने यह भी कहा कि कल से उसे स्कूल आने की जरूरत नहीं है।

उस कागज को पढते ही माँ कि आँखो में आँसू आ गए। अपनी माँ के आँखों में आँसू देख उन्होंने पूछा की कागज में ऐसा क्या लिखा है जो आपकी आँखों आँसू आ गये तो उनकी माँ ने कहा यह खुशी के आँसू हैं। इस कागज में लिखा है कि आपका बेटा बहुत ज्यादा जीनीयस है। पर हमारा स्कूल बहुत छोटे स्तर का है और यहाँ के शिक्षक भी जादा प्रशिक्षित नही है, इसलिए आप अपने बेटे को स्वयं शिक्षा दें।

कुछ सालों बाद उनकी माँ का स्वर्गवास हो गया। तब तक थॉमस एल्वा एडिसन एक सफल वैज्ञानिक बन चुके थे। एक दिन वह अपने घर के पुराने सामान को देख रहे थे तो उन्हें अलमारी के एक कोने में उन्हें कागज का एक टुकडा मिला । जब उन्होंने उसे खोलकर देखा और पढा तो उन्हें याद आ गया की यह वही गाज है जो वो स्कूल से लाए थे। उस कागज में लिखा था, ''आपका बच्चा बौद्धिक तौर पर कमजोर है, उसे इस स्कूल में अब और नही आना है''। एडिसन यह पढकर बहुत रोये। इस तरह एक महान माँ की सकारात्मक सोच ने बौद्धिक तौर पर कमजोर समझें जाने वाले बच्चे को एक महान वैज्ञानिक बना दिया।

सकारात्मक सोच, चंद शब्द नहीं है, जिसे थोडे से शब्दों में समझाया जा सके कि ये क्या है, इसका जीवन में महत्व क्या है? ये जिंदगी का एक अहम पहलू हैं। अगर सभी लोग इसको अपने जीवन में अपना लें, तो जीवन में कितने भी उतार चढाव आयें उससे निकलने का रास्ता भी मिल ही जाता है। परिस्थितियाँ कितनी ही विपरीत क्यों न हो मंजिल खुद-बखुद मिल जाती है। बस जरुरत है जीवन में सकारात्मक सोच अपनाने की।

विपरीत परिस्थितियाँ सबकी जिंदगी में आती हैं, मेरी भी जिंदगी में आयी यकीनन आप सब की जिंदगी में भी कभी न कभी आयी होंगी। सोच कर देखिये ऐसे कितने लोग होंगे जो अपने आत्मविश्वास को सुखी रेत की तरह मुठ्ठी से फिसलने नहीं देते। हालात के आगे अपने घुटने नहीं टेकते। तो शायद सिर्फ चंद लोग ही होंगे जिन्होंने अपनी सकारात्मक सोच से अपने आत्मविश्वास को खोने नहीं दिया बल्कि इसे अपनी ताकत बनाकर अपनी मंजिल को पाया है।

सकारात्मक सोच से आत्मविश्वास बढता है और आत्मविश्वास से कुछ कर गुजरने का साहस पैदा होता है। इसी साहस से उत्पन्न बल से व्यक्ति कठिन से कठिन समस्या को सुलझा लेता है। अगर आप ये सोच लें कि आप विपरीत परिस्थितियों से निकल सकते हैं, आपकी मंजिल आपके सामने है, बस जरुरत होती है सिर्फ एक कदम बढाने की, मंजिल खुद-बखुद मिल जायेगी।

अंजली राकेश पवार
कोंकण रेलवे रत्नागिरी

स्त्री सुरक्षा एवं सम्मान

आज मैं, कुछ शब्दों के माध्यम से नारी चित्रण एवं उसकी सुरक्षा की ओर ध्यान केन्द्रित करना चाहता हूँ। आज समाज की कैसी स्थिति है कि स्त्री जो कि सम्पूर्ण रूप से प्रकृति का अंश होते हुए भी अपने को हर पल असुरक्षित एवं अपमानित महसूस करती है। यह विचारधार शायद आज के युग में हर स्त्री के मन को झकझौर रही है। सम्पूर्ण विश्व में भारत एक ऐसा देश है जहां देवियों की वंदना एवं स्तुति होती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार विश्व नारी शक्ति के बिना 'शव' है। राम सीता के वियोग में वन-वन भटकते रहे। अनुसूया, द्रौपदी, अहिल्या से लेकर लक्ष्मीबाई तक हिन्दू परिवारों में मानों कंठस्थ है। फिर क्या कारण है कि, देवी की पूजा करने वाले देश में स्त्रियाँ सडकों, कार्यस्थलों, बाजारों में, यहाँ तक की घरों में भी सुरक्षित नहीं है। क्या हमारा सभ्य समाज, असभ्यता की ओर अग्रसर है?

वैदिक युग में पुरुष और नारी के बीच कोई पहचान नहीं केवल समानता थी। यहाँ बात अधिकारों की नहीं केवल कर्तव्यों को बांटने की है। शिव का अर्धनारीश्वर रुप यही दर्शाता है कि, पुरुष नारी के बिना अधुरा है। मनुस्मृति के अनुसार पिता को गुरू से दस गुना आदर मिलता है और माता को पिता से हजारों गुना आदर मिलता है। मनुस्मृति में कहा गया है कि नारी सम्मान सबकों करना चाहिए यदि पति, भाई, पुत्र वे अपना कल्याण चाहते हैं तो।

वैदिक युग में बालक एवं बालिका का उपनयन संस्कार किया जाता था, जिसमें दोनों के लिए शिक्षा अनिवार्य थी। फिर आजकल के युग में वही पुरुष नारी को मात्र भोग की वस्तु मानता है। देवी की पूजा करने वाले देश में एक कन्या को गर्भ में आते ही उसकी हत्या कर दी जाती है। क्या देवी सिर्फ मंदिरों में स्थापित होने के लिए हैं? और वास्तविक जीवन में औरत का कोई अस्तित्व नहीं। दूसरी तरफ समाज की विकृत मानसिकता की पुत्र वंश चलाने के लिए जरूरी है।

समाज के दोहरे मापदण्डों में जितने पुरुष हैं उतनी स्त्रियाँ भी है क्योंकि एक स्त्री ही पहले अपनी संतान में नैतिक गुणों का विकास कर समाज को सभ्य नागरिक प्रदान करती है। उचित संस्कार से पोषित बच्चे एवं अनुचित का निर्णय लेने में सक्षम होते है। जहां पर अमानवीय हटनाएँ घटित होती है, जैसे छेडछाड, स्त्रियों का अनादर, वहीं एक माँ की अकुशलता प्रदर्शित होती है कि बेटे को नारी का सम्मान एवं सुरक्षा का गुण विकसित नहीं कर पाई। आज के युग में माना स्त्री अपना आर्थिक योगदान कर रही है लेकिन सच यह भी है कि परिवार बिखर रहे हैं। संध्या को जब वह काम में थकीहारी आती है तो बच्चों को नैतिक आचरण देने का समय ही नहीं बचता। दिन भर बच्चे टीवी देखने से या फिर आया के माध्यम से सीखते हैं। संयुक्त परिवार अब गिने चुने रह गए हैं तो फिर बच्चों को सिखाये कौन? समाज की नींव बच्चे, जो हमारा कल यानी भविष्य है। एक माँ का दायित्व है कि अपने बच्चों में सम्पूर्ण गुणों का विकास करें और उन्हें उचित और अनुचित का भेद समाझाएं। स्त्री का दायित्व पुरुष के मुकाबले कहीं अधिक बडा होता है। नारी अबला नहीं एक सबला का रूप ले। यह आंदोलन घर-घर तक पहुंचना चाहिए। वह अपने भाई, पति, बेटे को संभाले और बहन व बेटी को सक्षम और समर्थ बनाए तभी सामाजिक क्रांति आ सकती है। पुरुष जाति अपनी सोच बदले व एक नवजात शिशु को गोद में उठाकर उसके नैतिक गुणों के विकास की जिम्मेदारी उठाएं।

कुछ दानवों के कारण सारे समाज को कलंकित होना पडता है और एक कुकृत्य का परिणाम समस्त नारी जाति को भोगना पडता है। अब समय आ गया है कि, ऐसी आक्रोश क्रांति का जो समय को बदलने के लिए विवश कर दें। अंत में, मैं सिर्फ इतना ही कह सकता हूँ की अगर औरत अपनी शक्ति का सम्मान करें तो कोई भी दानव उसका दमन नहीं कर सकता, अपितु नारी के द्वारा उसका संहार निश्चित है।

मो. नदीम, आशुलिपिक
भारतीय तटरक्षक अवस्थान, रत्नागिरी

बेटी

अभी तो मैं निराकार हूँ,
जिंदा रही तो आकार पा लूँ।
खिलने की चाह में गुमनाम कली हूँ,
कुछ नाम मिला तो पहचान बना लूँ।

नन्हे से दिल की है नन्ही-सी धडकनें,
बोझ हट गया तो उड़ान भर लूँ।

यहाँ तो अभी हुकूमत है अंधेरे की,
आँखे खोलू तो जहाँ रोशन कर दूँ।
हर तरफ है गमों का साया फैला हुआ,
कुछ खुशियाँ मिले तो दामन महका दूँ।

माँ की सहमें दिल की धडकनें मालूम होती है भूकंप-लहरे
कुछ मरम्मत होगी तो मजबूत बन जाऊं।
कत्ल की कई साजिश सून ली इन कानों ने,
जन्म की ख्वाहीशे जान लूँ तो उम्मीद से झूम लू।

जिंदगी की यह जंग जिस दिन खत्म होगी,
हर आँगन में बस बेटी ही
बुढ़ापे की लाठी होगी।

सूरज महादेव माने,
बैंक ऑफ़ इंडिया, रत्नागिरी

पवन गुब्बारा वेधशाला, कार्यसंचालन

पवन गुब्बारा वेधशाला, रत्नागिरी प्रादेशिक मौसम विज्ञान केंद्र, मुंबई के अधीनस्थ भारतीय मौसम विज्ञान विभाग की वेधशाला हैं। इस वेधशाला में मौसम के आँकडो को दर्ज किया हैं और उसे मौसम पूर्वानुमान हेतू प्रादेशिक मौसम केंद्र को ई-मेल तथा टेलीफोन द्वारा भेजा जाता हैं।

यह वेधशाला मुख्य रूप से सतह उपकरण से लेस हैं। जैसे कि

तापमापी - जिससे हम हवा का तापमान मापन करते हैं।

वायूभार मापक - जिससे हम वायू का भार मापन करते हैं।

वर्षामापी - जिससे हम वर्षा का मापन करते हैं।

इन सभी सतह उपकरणों के साथ यहा उपरीतन वायू उपकरण भी प्रयोग में लाते हैं। जैसे के पायलट बैलून तथा रेडिओ साँन्दे (जीपीएस साँन्दे) उपकरण। यह उपकरण सतह के उपर हवा का दाब (भार) तथा हवा की दिशा तथा हवा के वेग का मापन करने के लिये प्रयोग में लाये जातें हैं।

सतह उपकरणों से लिये निरीक्षण तथा मापन, मौसम पूर्वानुमान में जरुरी हैं, इसलिए यह निरीक्षण 24 घन्टे लिए जातें है। इस वेधशाला में दिन में (24 घन्टे में) आठ सतह निरीक्षण किये जाते हैं। वह आंतरराष्ट्रीय कालगणना के अनुसार 0000, 0300, 0600, ... 2100 UTC को रोज लिये जाते हैं। इस प्रकार यह वेधशाला निरंतर कार्यरत है। इसके साथ में कुछ विशेष निरीक्षण उपरीतन वायू के होते हैं। जरुरत के अनुसार गुब्बारों मे हायड्रोजन वायू भर उसे 0000,1200,.. UTC को आकाश में वायू की स्थिति को समझने के लिये आकाश में छोडे जाते हैं। इन गुब्बारों से हमें उपरी वायू की स्थिति का पता चलता हैं, जो विमानन तथा पूर्वानुमान में बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं।

रत्नागिरी वेधशाला अरब सागर के तट पर स्थित होने के कारण मौसमी (मान्सून) के बदलाव को समझने हेतु, यहा के निरीक्षण बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह वेधशाला महाराष्ट्र राज्य के दक्षिणी छोर पर होने के कारण मानसून की सूचना प्राप्त कराने हेतु अपना अलग महत्त्व प्राप्त करती हैं।

भारत मौसम विज्ञान विभाग भविष्य मे इस वेधशाला में Doplar रडार लगाने का विचार कर रही हैं, जिसके कारण भारी वर्षा के पूर्वानुमान में और सहजता आयेगी और नैसर्गिक आपदाओं से निपटना आसान होगा।

नितीन नारखेडे,
पवन गुब्बारा वेधशाळा

पिता

पिता एक उम्मीद है, एक आस है
परिवार की हिम्मत और विश्वास है,
बाहर से सख्त अंदर से नर्म है
उसके दिल में दफन कई मर्म है।
पिता संघर्ष की आंधियों में हौसलों की दीवार है,
परेशानियों से लड़ने को दो धारी तलवार है,
बचपन में खुश करने वाला खिलौना है,
नींद लगे तो पेट पर सुलाने वाला बिछौना है।
पिता जिम्मेवारियों से लदी गाड़ी का सारथी है,
सबको बराबर का हक़ दिलाता यही एक महारथी है,
सपनों को पूरा करने में लगने वाली जान है,
इसी से तो माँ और बच्चों की पहचान है।
पिता ज़मीर है पिता जागीर है
जिसके पास ये है वह सबसे अमीर है,
कहने को सब ऊपर वाला देता है
पर खुदा का ही एक रूप पिता का शरीर है।

कौस्तुभ कोट्टरवार,
बैंक ऑफ़ इंडिया

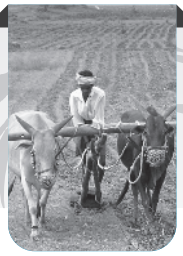

भारत की कृषि प्रणाली

हमारा भारत देश एक कृषि प्रधान देश है। हमारी जनसंख्या का 70-75 प्रतिशत भाग कृषि पर निर्भर करता है। हमारी देश की राष्ट्रीय आय का एक तिहाई भाग कृषि से आता है। हमारी अर्थव्यवस्था का कृषि एक महत्त्वपूर्ण भाग है। हमारी अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। हमारी भारत देश की जनसंख्या दिन ब दिन बढती ही जा रही है। इस बढती जनसंख्या के लिए हमें अधिक मात्रा मे अनाज की जरुरत पडेगी। इसलिए कृषि के विकास के लिए और हमारे देश के आर्थिक कल्याण के लिए हमें बहुत कुछ करना होगा।

हमारी कृषि लंबे समय से पूर्ण रूप से विकसित नही थी और हम अपने लोगों के लिए पर्याप्त अन्न उत्पन्न नही कर पाते थे। हमारे देश को अन्य देशों से अनाज खरीदने की जरुरत होती थी। लेकिन अब चीजें बदल रही है।

भारत अपनी आवश्यकताओं के मुकाबले अधिक अनाज का उत्पादन कर रहा है। कुछ खाद्यान्नों को अन्य देशों में भेजा जाता है। अत्याधिक सुधार किये गये है। कृषि हमारी पांच साल की योजनाओं के माध्यम से कृषि क्षेत्र में हरितक्रांती लाई गयी है।

अब हमारे देश खाद्यान्नों के मामले में आत्मनिर्भर हैं। यह अब अधिशेष अनाज और अन्य कृषि उत्पदकों को दूसरे देशों में निर्यात करने की स्थिति में है। अब भारत को चाय और मूंगफली के उत्पादन में दुनिया में पहला स्थान प्राप्त है। यह चावल, गन्ना, जूट और तेल के बीज के उत्पादन में दूनिया में दुसरे स्थान पर है। हमारे भारत में ज्यादासे जादा फलो के भी उत्पादन कीए जा रहे है। आम और केले के उत्पादन में भी हमारा भारत देश प्रथम क्रमांक पर है।

आजादी के पहले हमारी कृषि बारीश पर निर्भर थी। इसके परिणामस्वरूप हमारा कृषि उत्पाद बहुत छोटा था। अगर मान्सून अच्छा होता था, तो हमें अच्छी फसल मिलती थी और यदि हमारा मान्सून अच्छा नहीं आता था, तो फसलों की पैदावर खराब हो जाती थी, और देश के कुछ हिस्सों में अकाल आ जाता था।

हमारे किसान पहिले कृषि के प्राचीन तरीकों का इस्तेमाल कर रहे थे। पर कुछ सालों से वे स्वयं द्वारा उत्पादित बीज बो रहे है। पहले प्रयोग होने वाले बीज में अच्छी गुणवत्ता नही थी और हमारा उत्पादन कम आता था। पर अब ऐसा नही है। अब सरकार खेतों की उच्च उपज वाली किस्मों के बीज किसानों को प्राप्त करके दे रही है। ये अच्छे गुणवत्ता के बीज ने हमारे खेतों की उपज को काफी बढाया है।

भूमि का क्षेत्र एक प्रकार की खेती के तरह साल दर साल घट रहा है। इस घटते क्षेत्र में हमें ज्यादा से ज्यादा उत्पन्न निकालना होंगा। इस कमी को पूरा करने के लिए अधिक से अधिक बंजर भूमि को पुनर्जीवित किया जाना चाहिए। हमें ज्यादा से ज्यादा उत्पन्न निकालता होगा। इस कमी को पूरा करने के लिए अधिक से अधिक बंजर भूमि को पुनर्जीवित किया जाना चाहिए। हमें ज्यादा से ज्यादा तुषार एवं ठिबक जैसी सिंचन पद्धती का उपयोग करना चाहिए। इससे हमारी पानी की भी बचत होगी। इससे हमारी फसल को जितना पानी आवश्यक है। उतनाही पानी उपलब्ध होगा। और इससे हमारा उत्पादन भी ज्यादा से ज्यादा होगा। सरकार के द्वारा अधिक बर्बाद भूमि का पुनःप्राप्त करने के लिए उचित रसायन और सिंचाई सुविधाओं का उपयोग करके, खेती की पैदावार को बढा रही है। पहिले कीडे और रोग हमारे फसलो को बहुत नुकसान पहुंचते है। उचित उपज पाने के लिए कीटकनाशक और किडों के विरुद्ध फसलों को संरक्षित किया जाना चाहिए। पर अब सरकार किसानों को सबसिडी दरों पर किटकनाशक उपलब्ध करा रही है। इसके उपयोग ने कृषि उत्पन्न को काफी बढाया है।

एक ही फसल की बार-बार बुआई से मिट्टी अपनी प्रजनन क्षमता खो देती है। भूमि से बेहतर उपज पाने के लिए फसलों का पूर्णतः चक्रानुक्रम अच्छा तरीका है। फसल पैटर्न को बदलने से भूमि उर्वरता बनी रहती है और बेहतर फसलों का उत्पादन होता है, इसलिए किसानों द्वारा फसल का चक्रानुक्रम किया जाना चाहिए। हमे इसके लिए सेंद्रीय खेती करनी चाहिए। हमे रोगमुक्त बियाणों का उपयोग खेती करने के लिए करना चाहिए और कम समय में ज्यादा से ज्यादा उत्पादन देने वाली प्रजातियों का इस्तेमाल करना चाहिए। इससे हम अनाज भरपूर मात्रा में तयार कर सकेंगे और चक्रानुक्रम पद्धती का भी हमें अवलंब करना चाहिए। इससे हमारी जमीन की प्रजनन क्षमता भी खराब नही होंगी और हमारी फसल रोगमुक्त रहेगी।

हमारे किसान खेती के लिए पुराने तरीकों और पुराने औजारों का इस्तेमाल कर रहे थे। हमारे किसान सदियों से लकडी के हल का उपयोग करते थे। यह जमीन को काफी गहरे रुप में हल नहीं कर सकते थे। अब लोहा जुताई का इस्तेमाल किया जा रहा है। इससे जमीन में तुजाई गहरी हो सकती है और कम समय में बुआई के लिए क्षेत्र तैय्यार हो जाता है। आज बैंको और सहकारी समितियाँ ब्याज की कम दर पर किसानों को ऋण देते है। इन ऋणों से किसान नए औजार, बेदर बीज और खेत के लिए नई मशिनरी खरीदते है। बडी संख्या में किसान अब नलिकाएं, बुआई और फसलों के कटाई के लिए ट्रैक्टर का इस्तेमाल करते है। उन्होंने खेती के लिए नए उपकरण खरीदे है। जिससे खेती अधिक आसान और सुविधाजनक बन गई है। इससे हमारे देश में कृषि उत्पादन अग्रेसर है।

अब सरकार किसानों को शिक्षित करने की कोशिश कर रही है। कृषि महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई है। युवा शिक्षक कृषि छात्रों को कृषि विज्ञान से संबंधित सभी प्रकार के ज्ञान देते है। इन कॉलेजो और विश्वविद्यालयों ने किसानों के लिए अभिविन्यास

पाठ्यक्रम का आयोजन किया है। ये पाठ्यक्रम आधुनिक तकनीकों और खेती के तरीकों में लोगों को प्रशिक्षित करते है। दूरदर्शन, आकाशवाणी और अन्य कृषि से जुडे टीवी चैनल की सहाय्यता से भी खेती में नई तकनीकों के बारे में किसानों को शिक्षित किया जा रहा है। उन्होंने विशेष रूप से कृषिदर्शन और खेती की बातें जैसे किसानों के लिए विशेष कार्यक्रम शुरू कर दिये है।

सरकार कई मायनों में किसानों की मदद करने की कोशिश कर रही है। सरकार ने किसानों की फसल को बढावा देने के लिए नये कृषी विज्ञान केंद्र खोल के दिए है। और किसानों को खेती के बारे में पढने वाले प्रश्न का समाधान करने के लिए सरकार ने किसान कॉल सेंटर भी खोल के दिए है। इससे किसान अपनी खेती की बारे में कोई भी जानकारी चाहिए तो किसान कॉल सेंटर पे कॉल करके पूछ सकता है।

अब तो सरकार ने किसानों के लिए नई-नई योजनाएं बनाई है। जैसेकि, कृषि बिमा योजना । यह योजना किसान को बहुत लाभदायक है अगर नैसर्गिक स्थिति की वजह से किसान की फसल खराब हो जाती है तो उसकी भरपाई अब सरकार देगी। और परंपरागत कृषि विकास योजना, यह योजना किसान को सेंद्रीय खेती करने के लिए, बढावा दे रही है। कृषि सिंचन योजना इस योजना में सरकार किसानों को ठिबक सिंचन पद्धती का इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित कर रही है। जिससे पानी की भी बचत होगी। E-NAM (Electronic National Agriculture Market) ये एक Online प्लॅटफॉर्म है जिससे हमारी सरकार किसानों की फसल को डायरेक्ट मार्केट उपलब्ध करा के दे रही है इस प्रकार जैसी कई योजनाएं सरकार किसानों के लिए बना रही है।

सरकार का 2022 तक किसानों का उत्पादन दुगना करने का उद्देश है। इस प्रकार हम देखते है कि हमारी कृषि को विकसित करने और कृषि उत्पादन को बढाने के लिए सरकार हर संभव प्रयास कर रही है। हमें अभी भी रुकना नही है। हमें अपनी कृषि अभी भी आगे बढाने के लिए हमारे प्रयासों को जारी रखना है।

।। जय जवान । जय किसान।।

पूनम बाबासाहेब भिसे
बी.एससी. (कृषि)

सीबीएसई परिणामों और शिक्षा व्यवस्था

सीबीएसई बोर्ड की बारहवीं की परीक्षा का रिजल्ट आया है। 2 बच्चों ने 500 में से 499 अंक हासिल किये हैं। बच्चे बधाई के पात्र हैं। मौजुदा शिक्षा व्यवस्था रुलाई की पात्र है। पेपर सेट करने वाले दुहाई के पात्र हैं और कॉपियाँ जाँचने वाले कुटाई के पात्र हैं।

जिस बोर्ड के अंतर्गत पढ़ रहे बच्चें 500 में से 499 अंक ले आएं उस बोर्ड के मेंबरों को साइकिल के नीचे कूद कर जान दे देनी चाहिए। जिस पेपर में बच्चों के 100 में से 100 अंक आएँ, उसकी पेपर सेटर समिति के हर सदस्य को मुँह खोलकर अंदर थोडा थोडा काला हिट स्प्रे करना चाहिए। चुल्लू भर पानी भी इनके लिए ज्यादा होगा। ये अंक बच्चों की प्रतिभा की निशानी कत्तई नहीं हैं, ये एक पूरी शिक्षा व्यवस्था की दिमागी रूप से दिवालिया हो जाने की निशानी है। और कॉपी जांचने वाले महानुभावों के कहने ही क्या? ये अंक कुबेर जन्म नहीं अवतार लेते हैं।

हिंदी के प्रश्नपत्र में 4 काव्यांशों के काव्य सौन्दर्य पूछे गए थे। इन चार कवियों की तस्वीरों पर फिर से हार चढा देना चाहिए और उनकी रचनाओं को सिलेबस से निकालकर बाहर कर देना चाहिए कि, भैया आपकी रचना की अंतिम समीक्षा आ चुकी है और उसके दस में से दस नंबर देकर अन्यतम होने की पुष्टि की जा चुकी है। आपकी रचना की ओवरहालिंग हो चुकी है, उससे नए विचार उठने की कोई संभवाना अब बची नही है। आचार्य महोदय के बैठने के लिए नामवर सिंह जी की कुर्सी लाई जानी चाहिए। अंग्रेजी पेपर में एक लेटर टू द एडिटर लिखना था। जिसमें महिलाओं की समसामयिक समस्याएँ और सुधार पर अपने विचार लिखने थे। महिला आयोग की अध्यक्ष को अपनी कुर्सी तुरंत उन अध्यापिका महोदया के लिए छोड देनी चाहिए जिन्होंने पूरे अंक देकर ये पुष्टि कर दी कि महिलाओं की सभी समस्याएं समझी जा चुकी हैं और उनकी स्थिति सुधार के अंतिम तरीके आ चुके हैं। साइंस / मैथ में सैकडा मारने वाले छात्रों के दल को उनके शिक्षक महोदय और कॉपी जाँचने वाले अंगराज कर्ण के नेतृत्व में PISA (प्रोग्राम फॉर इंटरनॅशनल स्टुडेंट असेसमेंट) (आंतरर्राष्ट्रीय छात्र मूल्यांकन कार्यक्रम) में भेज देना चाहिए। जहाँ से आखिरी भारतीय दस्ता 2009 में भाग आया था और वापस तबसे गया ही नहीं। भारत के ये शतकवीर पूरे विश्व में नीचे से दुसरे स्थान पे आए थे। पर दोष इन मासूमों का नही है, दोष इन कमबुद्धी अध्यापकों, रट्टोत्पादी आंकलन व्यवस्था का है।

इसी आंकलन व्यवस्था से निकले रट्टूबसंत कोचिंग की लिफ्ट से आइआइटी / एम्स के माले पे जाएंगे। फिर सफलता की लिफ्ट चढकर मल्टीनेशनल कंपनियों में जाएंगे और फिर विश्व की मल्टीनेशलन कंपनियां कहेंगी की भारतीय छात्रों की एम्प्लोयाबिलिटी ही नहीं है। हमें इनकी फिर से ट्रेनिंग करानी पडती है। अरे, कैसे एम्प्लोयाबिलिटी नहीं है मियाँ? मंटूआ के प्रैक्टिकल में 30 में 30 नंबर आये थे। इंटर में गजब बात करते हैं आप भी। और जब एप्पल का कोफाऊंडर कह देता है कि 'भारत की छात्रों मे रचनात्मकता नहीं है'' आफ फनफना जाते हैं। आपका फनफनाना जायज है। कोई आपके गुल्लुओं को ऐसा कैसे कह सकता है? तो आप मग्गूदाई भारतीय शिक्षा व्यवस्था के दिए इन शतकधारी अण्डों को सेइये, दुलराइये, इनके साथ फोचो खिचांईये। उनकी मार्कशीट को व्हाटसअप्प का स्टेटस बनाईये।

सुना है 499 वाली एक बिटिया परेशान है कि उसका 1 नंबर इसलिए कम रह गया क्यूँकी वो सोशल मिडिया पर अपना समय देती थी। उसे पूरी तरह से एंटीसोशल ना बन पाने का दुःख है। मुझे उससे सहानुभूति है। उससे रिश्तेदारों को उसे तुरंत एक आइस्क्रीम देनी चाहिए और सर पर हाथ फेरते हुवे कहना चाहिए, ''बेटा सब ठीक हो जायेगा''। अंततः एक बार फिर से 12 के परिणामों की बहुत बहुत बधाई। मैं इन शतकवीरों पर गुलाब की पंखुडियाँ और सीबीएसई पर बाकी का गमला फेंकना चाहता हूँ।

शशांक भारतीय
निरीक्षक, आयकर विभाग

हिंदी और भारतीय भाषाएं

विश्व आज जिस दौर से गुजर रहा है, इसमें कई स्तरों पर बदलाव आए हैं। भूमंडलीकरण के कारण लोगों के सांस्कृतिक भाषाई और देशज सोच में बदलाव आए हैं। भारतीय समाज में इस बदलाव का असर कहीं अधिक देखा जा रहा है। जिससे लोगों में मूल्यों से अधिक सुख-सुविधाओं के प्रति कही ज्यादा मोह बढा है। पैसा जीवन का पर्याय बन गया है। सांस्कृतिक और भाषाई चेतना धीरे-धीरे बदलती या गायब होती दिखाई पड रही है। ऐसे में सांस्कृतिक और भाषाई चेतना को लेकर संकट महसूस होना लाजिमी है।

अंग्रेजी का खतरा केवल हिंदी के लिए ही नहीं, अपितु भारतीय भाषाओं पर ही उसी तरह से है। गांधी कहते हैं आप और हम चाहते हैं कि करोडों भारतीय आपस में अंतर्प्रांतीय संपर्क कायम करें। स्पष्ट हैं कि अंग्रेजो के द्वारा दस पीढियां गुजर जाने के बाद भी हम परस्पर संपर्क स्थापित न कर सकेंगे। स्पष्ट है कि सात दशक व्यतीत हो जाने के बाद भी गांधी जी द्वारा महसूस किया गया भाषाई संकट आज भी उससे कही अधिक गहरा हो गया है। हम भले ही इसे राजनीतिक षडयंत्र या स्वार्थ का परिणाम बताएं लेकिन सच यह भी है कि हिंदी और हिंदीतर भाषाओं का आपसी भाईचारा कायम करने में यह सबसे बडा बाधक रहा है। अब जबकि हिंदी का संकट अन्य कई तरह से हमारे सामने दृष्टव्य होने लगा है। भारतीय भाषाओं का आपसी भाईचारा का मुा गौण होता जा रहा है। ऐसे में डॉ. रामविलास शर्मा का यह कथन कितना प्रासंगिक हो जाता है, हिंदी अंग्रेजी का स्थान ले, इसकी बजाय यह वातावरण बनाना चाहिए कि सभी भारतीय भाषाएं अंग्रेजी का स्थान लें।

हिंदी की व्यापकता का दायरा उसके संग्रहणीयता और उदारता के कारण है। हिंदी में उदारता के नाम पर उसे उसकी मौलिकता, नवीनता और सृजनात्मकता को धूमिल किया जा रहा है। हिंदी भारतीय भाषाओं की मिठास, नवीनता और सृजनात्मकता की पावनी पवित्रता को वंचित होती जा रही है। इसे इस रुप में भी हम समझ सकते हैं कि हिंदी-अंग्रेजी की अवैज्ञानिकता, दबंगई और विचित्रात्मकता के कारण हिंग्लिश रूप में अपना स्वभाव खोती जा रही है और निर्मिती होने की जगह खण्डहर में बदलती जा रही है, आवश्यकता है भारतीय भाषाओं के शब्दों, शैलियों और सांस्कृतिक चेतना से लबरेज होकर हिंदी और भी सहज और संग्रहणीय बने, लेकिन हो रहा है इसका ठीक उल्टा, इससे हिंदी का अन्य भारतीय भाषाओं का अंतर्संबंध बढने और गहरे होने के स्थान पर दुरुह होते जा रहे हैं, इस पर दृष्टि डालने की आवश्यकता है।

भारत सांस्कृतिक विविधता के साथ ही साथ भाषाई विविधता वाला देश है। ''कोस कोस पर बदले पानी चार कोस पर बदले वाली'' की कहावत इसी परिप्रेक्ष्य में प्रचलित रही है। अनेक बदलावों के बाद भी आज भारत की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता अपने मूल स्वरुप में कायम दिखती है। जब हम भाषाई विविधता की बात करते हैं, तो हमारे सामने भारत में बोली जाने वाली प्रादेशिक भाषाओं की बात ही नहीं आती, बल्कि सेकडों की तादाद में बोली जाने वाली बोलियां भी इसमें सम्मिलित होती हैं। भारतीय संस्कृति और समाज के विकास में किसी के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। हमारे लिए जितनी महत्त्वपूर्ण हिंदी है उतनी ही तमिल, तेलुगु, कन्नड, पंजाबी, डोगरी, बोडो, मलयालम, बंगला, असमिया, मराठी और कश्मिरी हैं। यदि हिंदी राजभाषा और राष्ट्रभाषा रूपी गंगा की धारा है, तो अन्य प्रादेशिक भाषाएं भी कावेरी, सतलज और ब्रह्मपुत्र की धाराएं है। जैसे सभी नदियां बहते हुए समुद्र में मिलकर एक हो जाती हैं, उसी तरह से भारत की सभी भाषाओं का मिलान भी निरंतर होता रहता है। सुब्रह्मण्यम भारतीय ने कभी कहा था भारत माला भले ही 22 भाषाएं बोलती हों, फिर भी उसकी चिंतन प्रक्रिया एक ही है। आज भूमंडलीकरण का दौर है। भाषा संस्कृति की महत्ता बाजारवाद के आगे दबती नजर आ रही है। लेकिन इस बात को नहीं नकारा जा सकता कि भारतीय भाषाओं के अंतर्संबंध तथा भारतीय संस्कृति की विराटता आज कहीं पहले से अधिक महत्त्व हो गई हैं। हिंदी दशकों पहले इस देश की राजभाषा बनी थी, लेकिन राष्ट्रभाषा कब बनेगी, इस पर कोई न तो राजनेता बोलने की स्थिति में है, न तो हिंदी के ध्वजवाहक ही यह जानते हुए भी कि हिंदी को भारत की पहचान के लिए जीवित रहना ही नहीं। मुखर रहना भी आवश्यक है और हिंदी न तो बिना भारतीय भाषाओं के सहयोग से जीवित रह सकती है और न ही भारतीय भाषाएं हिंदी के बिना जिंदा रह सकतीहै। सदियों से हिंदी और भारतीय भाषाओं का जो अंतर संबंध रहा है, वह सहोदर बहनों की तरह रहा है। कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक भारत को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य यदि किसी भाषा ने किया, तो वह हिंदी है। इसलिए हिंदी किसी भारतीय भाषाओं के लिए खतरा बनेगी, प्रश्न ही नहीं उठता है। हिंदी और भारतीय भाषाओं को खतरा तो अंग्रेजी और इंग्लिश से है। इसलिए वक्त की नजाकत को समझते हुए प्रत्येक देशवासी को हिंदी या भारतीय भाषाओं के संबंधों पर सवाल न उठाकर अंग्रेजी की बढती एकाधिकारिता परसवाल उठाने चाहिए और इससे सावधान रहना चाहिए। अब समय आ गया है कि हिंदीतर भाषी प्रदेशों को नए सिरे से हिंदी को अपनी प्रांतीय भाषा के संबंधों से विचार-विमर्श करना चाहिए। भाषा के बिना न तो किसी देश की कल्पना की जा सकती है और न तो किसी समाज की ही। इसलिए भाषा की उपेक्षा का मतलब स्वयं अपने अस्तित्व को ही नकारना जैसे विविधताओं के बीच भी सांस्कृतिक आदान-प्रदान कभी नहीं रुकता, इसी तरह भाषाई विविधता के होते हुए भी भाषाओं के मध्य आदान-प्रदान नहीं रुकता। वह चाहे भाषाई संस्कृति के रूप में हो या व्याकरणिक रुप में या वचनात्मक रुप में हो भाषाओं के अन्तर्संबंध को न तो रोका जा सकता है और न तो समाप्त किया जा सकता है।

हिंदी हमारे देश की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है। आजादी के पहले भी यह संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग की जाती रही है। यही कारण है कि हिंदी के अनेक शब्द, क्रियापद और संज्ञाएं भारत की अनेक प्रान्तीय भाषाओं में उसी अर्थ में या दूसरे अर्थ में मिल जाते हैं। इतना ही नहीं, हिंदी की सहजता, वैज्ञानिकता और रागात्मकता भी भारत की प्रान्तीय भाषाओं में मिल जाती है। यह सब सहज रूप से हुआ है। हिंदी के लिए जितना हिंदी भाषी-भाषियों के लिए महत्त्व है, उससे कहीं अधिक गैर-हिंदी भाषी के लिए महत्व है।

हिंदी न तो किसी जाति, वर्ग या क्षेत्र विशेष की भाषा रही है। हिंदी बहती नदी की धारा तरह सब के लिए उपयोगी और कल्याणकारी रही है। यही कारण है गैर-हिंदी भाषी-भाषी क्षेत्रों के हिंदी उन्नायकों ने हिंदी को जन भाषा के रूप में स्वीकार करते हुए इसके उत्थान के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर

दिया,

वह चाहे गुजराती भाषा-भाषी महर्षि दयानंद और गांधी हों, बंगाल के राजाराम मोहन राय, केशवचंद्र सेन और रवींद्रनाथ टैगोर तथा नेता सुभाष रहे हों, या महाराष्ट्र के नामदेव, गोखले और रानडे हों। या तमिलनाडु के सुब्रह्मण्यम भारती, पंजाब के लाला लजपत राय, आन्ध्र प्रदेश के प्रोफेसर जी सुंदर रेड्डी जैसे अनेक अहिंदी भाषा-भाषी क्षेत्रों में हिंदी को बढावा देने के लिए अनेक महत्वपूर्ण प्रयास किए।

हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का अंतरसंबंध प्रगाढ होने से सबसे बडी बाधा अंग्रेजी रही है। अंग्रेजों ने स्वतंत्रता के पूर्व ही इसका जाल तैयार कर दिया था और भाषा जो हमारे जीवन, समाज और संस्कृति का अभिन्न अंग है को राजनीतिक रंग दे दिया था। स्वतंत्रता के 70 वर्षों के बाद आज जब हम हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के संबंधों का अवलोकन करते हैं तो पाते हैं कि ये संबंध सुदृढ होने की जगह निरंतर कमजोर हुए हैं। हिंदी वालों को तमिल, तेलुगू, कन्नड, पंजाबी और उडिया शब्द-संस्कृति में तैरने की जगह अंग्रेजी के जाल-जंजाल में अधिक भाता रहा है। इस विडम्बना और संकट को वर्षों पूर्व हिंदी के महान उन्नायक फादर डॉ. कामिल बुल्के ने समझ लिया था, डॉ. बुल्के कहते है, ''भारत पहुंचकर मुझे यह देखकर दुःख हुआ कि, बहुत शिक्षित लोग अपनी ही संस्कृति से नितांत अनभिन्न है और अंग्रेजी बोलना तथा विदेशी सभ्यता में रंग जाना गौरव की बात समझते हैं।''

हमें भले ही हिंदी का विरोध करने वाले दक्षिण के कुछ राज्यों के अंग्रेजी परस्त राजनेताओं के स्वार्थवादी और संकीर्णवादी विरोध को अपने अनुसार अलग-अलग तर्कों से इसे किंतु-परंतु में उलझाकर इसके पीछे मन्सुबे को दरकिनार कर दें, लेकिन वास्तविकता को कैसे झुठला सकते हैं कि इसके पीछे मुख्य रूप से भारतीय भाषाई, सांस्कृतिक चेतना को कमजोर करने का ही उद्देश्य रहा है। अंग्रेजी को यदि भारतीय अस्मिता संस्कृति और सुख का पर्याय बनाना है, तो सबसे पहले हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के अंतर संबंधों को कभी मजबूत नहीं बनने देना है। इस घृणित मनसूबे के कारण ही अंग्रेजी का प्रभुत्व लगातार भारतीय भाषाई चेतना को अचेतन बनाता रहा है। हम इस संकट को समझने में निरंतर भूल करते आ रहे हैं। इसे समझने की आवश्यकता है।

इस सच्चाई को हम कैसे झुठला सकते हैं कि आज भी तमिल, कर्नाटक, आंध्र, केरल, त्रिपुरा, असम, महाराष्ट्र, गुजरात जैसे अनेक राज्यों में हिंदी समझने वाले, बोलने वाले ही नहीं हिंदी में लेखन करने वाले सैकडों लेखक-पत्रकार मिल जाते हैं जो हिंदी को समृद्ध बनाने के लिए पूरे मनोवेग से कार्य कर रहे हैं। इससे हिंदी की अन्य भारतीय भाषाओं के अंतर संबंधों में मजबूती आ रही है, लेकिन यह आवश्यकता से बहुत कम है या कहे यह ऊंट के मुंह में जीरे के समान है। लेखक को भारत सरकार के गैर-हिंदी भाषा भाषी, पत्रकार-लेखक शिबिर में प्रशिक्षक के रुप मे सम्मिलित होने का अवसर मिला है और उन नव लेखक-पत्रकारों की भाषाई चेतना को नजदीक से देखा समझा है, जिस उत्सुकता और संकल्प को गैर-हिंदी भाषा-भाषी नवलेखकों में देखने को मिला, यह आश्चर्य में डालने वाला था। यहांतक कि तमिलनाडु जहां हिंदी का सबसे अधिक विरोध कभी हुआ करता था, उस क्षेत्र के नव हिंदी लेखक हिंदी को तमिल के साथ सहअन्तर्संबन्धों को सबसे अधिक प्रगाढ बनाने की बात करते दिखे, इतना ही नहीं तमिल के शब्दों को हिंदी में प्रयोग करने के आश्चर्यजनक तजुर्बे भी हुए।

हिंदी का स्वभाव और भारतीय भाषाओं का स्वभाव एक जैसा ही है, किसी भी स्तर पर टकराव नहीं है, फिर क्यों हिंदी का विरोध गैर हिंदी भाषा-भाषी क्षेत्रों में यंत-तत्र देखा जाता है? यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण है। दरअसल, आजादी के पहले अंग्रेजों ने भारतीय भाषाओं का वर्गीकरण कराया था, उसके पीछे न कोई भाषाई तथ्य, व्याकरण और लिपि का आधार था और न ही सांस्कृतिक या धार्मिक की भारतीय भाषाओं का वर्गीकरण इस तरह से किया गया जिससे यह साबित हो सके कि आर्य भाषा परिवार की भाषाओं और द्रविड भाषा परिवार की भाषाओं में न पुरकता न ही कोई अंतर्संबंध है संबंध है, जिससे उन्हें भाषा के नाम पर भी देश को विभाजित कर राज करने में सुविधा हो सके। गौरतलब है आर्य भाषा परिवार का नामकरण मैक्स मूलर के द्वारा किया गया और द्रविड भाषा परिवार की भाषाओं में न पूरकता न ही कोई अंतर्संबंध है संबंध है, जिससे उन्हें भाषा के नाम पर भी देश को विभाजित कर राज करने में सुविधा हो सके। गौरतलब है आर्य भाषा परिवार का नामकरण मैक्स मूलर के द्वारा किया गया और द्रविड भाषा परिवार का नामकरण पादरी रॉबर्ट काल्डवेल के द्वारा किया गया।

पंजाबी और हिंदी भाषा के अंतर्संबंध भक्तिकाल, गुरुवाणी और आधुनिक युग के साहित्य में भी सहज सुलभ है। प्रोफेसर पूर्णसिंह, अमृता प्रीतम, देवेंद्र सत्यार्थी और अजित कौर जैसे न जाने कितने रचनाकार जो पंजाबी पृष्ठभूमि के होते हुए भी हिंदी में सबको स्वीकार हुए।

इस बात को कितने लोग जानते हैं कि लिपि देवनागरी में हिंदी-संस्कृत लिखी जाती है। जिस लिपी देवनागरी में कश्मिरी और मराठी भी लिखी जाती रही है। लिपि की एकता ने भी हिंदी को मराठी, कश्मिरी को पास आने का अवसर दिया। इसी तरह गुजराती लिपि भी कुछ अंतर से देवनागरी जैसी ही है। गुजराती और हिंदी का अंतर्संबंध जगजाहीर है। गुजराती भाषियों ने हिंदी को बढ़ावा देने के लिए क्या नहीं किया।

इसी तरह मलयालम में 80 प्रतिशत शब्द संस्कृत से सीधे ग्रहण किए गए हैं। मलयालम बोलते समय ऐसा लगता है, बोलने वाला संस्कृत का बदले रुप वाली भाषा बोल रहा है। उच्च स्तर के अनुसंधानों से यह साबित हो चुका है कि हिंदीतर प्रदेशों में रचा गया हिंदी साहित्य परिणाम में अतुलित तो है ही साहित्यिक विशेषताओं से भी उत्कृष्ट कोटि का है। इस बात को हिंदी भाषा-भाषी क्षेत्र के लोगों को समझनी चाहिए कि जिस प्रकार से हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी को समृद्ध बनाने के लिए गैर हिंदी भाषा-भाषी लेखक, पत्रकार और हिंदी प्रचारकों ने अपना जीवन समर्पित करके हिंदी को सर्वसुलभ और सर्वमान्य भाषा बनाने में लगे हुए हैं। उसी तरह अन्य भारतीय भाषाओं को भी हिंदी क्षेत्र के लोगों को सीखना चाहिए औरजहां तक हो सके, संबंधों में जीना चाहिए। इससे हिंदी और अच्छी तरह से देशभर में आगे बढ सकेगी।

आज मिडिया का जमाना है। अंतरजाल (इंटरनेट) के कारण सारा विश्व एक ग्लोबल गांव के रुप में विकसित होता जा रहा है। ऐसे में हिंदी और भारतीय भाषाओं को एक साथ विश्व स्तर पर स्थापित करने का अवसर

अधिक बढ़ गए हैं। लेकिन इसके लिए पूरब-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण का भेद मिटना चाहिए। अंग्रेजी के प्रति जैसा रोजगार के कारण ब्यामोह बढ गया है। उसकी जगह हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग पैदा करना होगा। हिंदी विश्व स्तर पर तब अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकेगी जब उसकी अन्य बहनों यानी भाषाओं को भी पुरा सम्मान मिलेगा। स्पष्ट है प्रत्येक भाषा के साथ उसकी अपनी संस्कृति भी होती है। यदि भाषा को बचाना है तो उस भाषा की संस्कृति को भी बचाना आवश्यक है। गौरतलब है, इस भाषाई संस्कृति के कारण है। भारत विविधताओं का देश होते हुए भी हमेशा एक नजर आता है। यह भाषाई विविधता कहीं समाप्त न हो जाए। इसके प्रति हमें सचेत रहने की आवश्यकता है। अंग्रेजी के व्यामोह ने हिंदी और भारतीय भाषाओं के अंतरसंबंध में अच्छा खासा असर डाला है। यही कारण है कि शिक्षा के क्षेत्र में जब पूरे देश में हिंदी माध्यम से पठन-पाठन की बात आती है, तो हिंदी के विरोध में आवाज बुलंद की जाने लगती है, लेकिन अंग्रेजी के नाम पर कोई किसी तरह का विरोध नही दिखाई पडता है। जबकि अंग्रेजी से हिंदी को जितना खतरा है, उतना ही खतरा भारतीय भाषाओं को भी है। इस सच्चाई को यदि हम समझ ले तो भारत की राष्ट्रभाषा हकदार हिंदी और भारतीयता की पहचान भारतीय भाषाओं पर मंडराता संकट समाप्त हो सकता है ।

सी. जे. महामुलकर
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
कोंकण रेलवे

गूगल वॉइस टायपिंग – अपनी आवाज के साथ टाइप करें

आप एक आसान तरीके से दस्तावेज़ में अपनी आवाज के साथ टाइप कर सकते हैं। फिलहाल, यह सुविधा क्रोम ब्राउज़र में ही उपलब्ध है।

1. सबसे पहले यह सुनिश्चित करें की आपके कंप्यूटर से एक माइक्रोफोन जुडा हुआ है और वह काम करता है तथा एक जी-मेल यूजर आईडी-पासवर्ड होना जरुरी है।
2. Chrome ब्राउज़र में http://google.com खोलें।
3. गूगल एप्स पर क्लिक करके More में से गूगल डॉक्स एप्प पर क्लिक करने जी-मेल आईडी से लोग इन करें।
4. गूगल डॉक्स में एक नया दस्तावेज़ खोलें।
5. उपकरण (Tools) मेनू > वॉइस टायपिंग (Voice Typing) पर क्लिक करें। पॉप अप माइक्रोफोन बॉक्स से भाषा (हिंदी) का चयन करे।
6. आप पाठ में बोलने के लिए तैयार हैं, तो माइक्रोफोन बॉक्स पर क्लिक करें।
7. सामान्य गति और वॉल्यूम से स्पष्ट रूप से अपना पाठ बोलें।
8. रोकने के लिए माइक्रोफोन पर पुनः क्लिक करें।

वॉइस टायपिंग की गलितयों में सुधार : आवाज के साथ टाइप करते हुए अगर गलती हो जाए तो गलती पर कर्सर ले जाकर और माइक्रोफोन से पुनः बोल कर ठीक कर सकते हैं। गलती सुधारने के बाद, आप आवाज टायपिंग जारी रखना चाहते हैं, वहां कर्सर वापस ले जाएं।

मोबाइल फोन पर गूगल वाइस टायपिंग के लिए

1. Play Store में जाकर Google Indic Keyboard डाउनलोड करके इंस्टाल करें।
2. Setting >> Language and Input में जाकर Keyboard & Input Method में से Google Indic Keyboard को टिक करें तथा Default में भी Google Indic Keyboard को चुनें, इसके अतिरिक्त गुगल वाइस टाइपिंग विकल्प को भी टिक करें।
3. जिस भी एप्लीकेशन में टाइप करना हो, टाइप करने के लिए क्लिक करने पर की-बोर्ड उपलब्ध होगा। की-बोर्ड के ऊपरी दाएं हिस्से पर उपलब्ध माइक्रोफोन बटन क्लि करें।
4. Setting Option में जाकर हिंदी भाषा का चयन करें।
5. अब आपका फोन वाइस टाइपिंग के लिए तैयार है। उपरोक्त प्रक्रिया केवल एक बार ही करने की आवश्यकता होगी।
6. जब भी टाइप करना हो की-बोर्ड पर उपलब्ध माइक्रोफोन के बटन पर क्लिक करें और सामान्य गति और वॉल्यूम से स्पष्ट रुप से अपना पाठ बोलें, इससे आप SMS, WhatsApp, E-mail, Google Docs आदि पर वाइस टाइपिंग कर सकेंगे।

Android Phone में Google Docs पर कार्य करना

Play Store से Google Docs डाउनलोड करके इंस्टाल करें। मोबाइल फोन में Google Docs पर कार्य तथा कंप्यूटर में एक की गूगल account होने पर Google Docs में फाइलें एक समान ही रहेंगी। फाइलों पर कार्य आप मोबाइल तथा कंप्यूटर पर आसानी से कर सकेंगे।

दि. 28 नवम्बर 2018 बैठक की झलकियाँ...

दि. 28 नवम्बर 2018 बैठक की झलकियाँ...

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी

दि. 28 नवम्बर 2018 बैठक की झलकियाँ...

समीक्षा एवं अध्यक्षीय संबोधन

भारतीय तटरक्षक द्वारा
राजभाषा कार्यान्वयन की प्रस्तुति

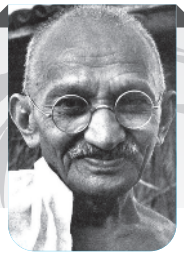

राष्ट्रपिता : महात्मा गांधी

''आपको मानवता में विश्वास नहीं खोना चाहिए। मानवता सागर के समान है।यदि सागर की कुछ बुँदे गन्दी हैं, तो पूरा सागर गंदा नहीं हो जाता।।''

उक्त उद्गार जिस महापुरुष द्वारा उद्गारित किये गए, वह महापुरुष महात्मा गांधीजी को ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का नेता और भारत देश के 'राष्ट्रपिता' के रूप में माना जाता है। इनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्तूबर 1896 को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता का नाम करमचंद गांधी था। मोहनदार की माता का नाम पुतलीबाई था जो करमचंद गांधी जी की चौथी पत्नी थी। मोहनदास अपने पिता की चौथी पत्नी की अंतिम संतान थे। गांधी की मां पुतलीबाई अत्याधिक धार्मिक थी। उकनी दिनचर्या घर और मन्दिर में बंटी हुई थी। वह नियमित रुप से उपवास रखती थीं और परिवार में किसी के बिमार पडने पर उसकी सेवा सुश्रुषा में दिन-रात एक करत देती थी। मोहनदास का लालन-पालन वैष्णव मत में रमे परिवार में हुआ और उन पर कठिन नीतियों वाले जैन धर्म का गहरा प्रभाव पडा। जिसके मुख्य सिद्धांत अहिंसा एवं विश्व की सभी वस्तुओं को शाश्वत मानता है। इस प्रकार, उन्होंने स्वाभाविक रुप से अहिंसा, शाकाहार, आत्मशुद्धी के लिए उपवास और विभिन्न पंथों को मानने वालों के बीच परस्पर सहिष्णुता को अपनाया। मोहनदास एक औसत विद्यार्थी थे, हालांकि उन्होंने यदा-कदा पुरस्कार और छात्रवृत्तियां भी जीतीं। वह पढाई व खेल, दोनों में ही तेज नहीं थे। बीमार पिता की सेवा करना, घरेलू कामों में मां का हाथ बंटाना और समय मिलने पर दूर तक अकेले सैर पर निकलना, उन्हें पसंद था। उन्ही के शब्दों में उन्होने 'बड़ों की आज्ञा का पालन करना सीखा, उनमें मीनमेख निकालना नहीं।''

उनकी किशोरावस्था उनकी आयु-वर्ग के अधिकांश बच्चों से अधिक हलचल भरी नहीं थी. हर ऐसी नादानी के बाद वह स्वयं वादा करते 'फिर कभी ऐसा नहीं करुंगा' और अपने वादे पर अटल रहते। उन्होंने सच्चाई और बलिदान के प्रतीक प्रल्हाद और हरिश्चंद्र जैसे पौराणिक हिन्दू नायकों को सजीव आदर्श के रूप में अपनाया। गांधी जी जब केवल तेरह वर्ष के थे और स्कूल में पढते थे। उसी वक्त पोरबंदर के एक व्यापारी की पुत्री कस्तुरबा से उनका विवाह कर दिया गया। युवा गांधीजी 1887 में मोहनदास ने जैसे-तैसे 'मुंबई विद्यापीठ' की मैट्रिक की परीक्षा पास की और भावनगर स्थित 'सामलदास कॉलेज' में दाखिल लिया। अचानक गुजराती से अंग्रेजी भाषा में जाने से उन्हें व्याख्यानों को समझने में कुछ दिक्कत होने लगी। इस बीच उनके परिवार में उनके भविष्य को लेकर चर्चा चल रही थी।

अगर निर्णय उन पर छोडा जाता, तो वह डॉक्टर बनना चाहते थे। लेकिन वैष्णव परिवार में चीरफाड की इजाजत नहीं थी। साथ ही यह भी स्पष्ट था कि यदि गुजरात के किसी राजघराने में उच्च पद प्राप्त करने की पारिवारिक परंपरा निभानी है तो उन्हें बैरिस्टर बनना पडेगा और ऐसे में गांधीजी को इंग्लैंड जाना पडा। यूं भी गांधी जी का मन उनके 'सामलदास कॉलेज' में कुछ खास नहीं लग रहा था, इसलिए उन्होंने इस प्रस्ताव को सहज ही स्वीकार कर लिया। उनके युवा मन में इंग्लैंड की छवि 'दार्शनिकों और कवियों की भूमि, संपूर्ण सभ्यता के केन्द्र' के रूप में थी। सितंबर 1988 में वह लंदन पहुंच गए। वहां पहुंचने के 10 दिन बाद वह लंदन के चार कानून महाविद्यालय में से एक 'इनर टेम्पल' में दाखिल हो गए।

1906 में टासवाल सरकार ने दक्षिण आफ्रिका की भारतीय जनता के पंजीकरण के लिए विशेष रुप से अपमानजनक अध्यादेश जारी किया। भारतीयों ने सितंबर 1906 में जोहेन्सबर्ग में गांधी के नेतृत्व में एक विरोध इस प्रकार सत्याग्रह का जन्म हुआ, जो वेदना पहुंचाने के बजाए उन्हें झेलने, विद्वेषहीन प्रतिरोध करने और बिना हिंसा किए उससे लड़ने की नई तकनीक थी।इसके बाद दक्षिण अफ्रिका में सात वर्ष से अधिक समय तक संघर्ष चला। इसमें उतार-चढाव आते रहे, लेकिन गांधी के नेतृत्व में भारतीय अल्पसंख्यकों के छोटे से समुदाय ने अपने शक्तिशाली प्रतिपक्षियों के खिलाफ संघर्ष जारी रखा। सैंकडो भारतीयों ने अपने स्वाभिमान को चोट पहुंचाने वाले इस कानून के सामने झुकने के बजाय अपनी आजीविका तथा स्वतंत्रता की बलि चढाना ज्यादा पसंद किया।

गांधी जब भारत लौट आए - सन 1914 में गांधीजी भारत लौट आए। देशवासियों ने उनका भव्य स्वागत किया और उन्हें महात्मा पुकारना शुरू कर दिया। उन्होंने अगले चार वर्ष भारतीय स्थिति का अध्ययन करने तथा उन लोगों को तैयार करने में बिताए जो सत्याग्रह के द्वारा भारत में प्रचलित सामाजिक व राजनीतिक बुराइयों को हटाने में उनका साथ दे सकें। फरवरी 1919 में अंग्रेजों के बनाए रॉलेट एक्ट कानून पर, जिसके तहत किसी भी व्यक्ति को बिना मुकदमा जलाएं जेल भेजने का प्रावधान था, उन्होंने अंग्रेजों का विरोध किया। फिर गांधी जी ने सत्याग्रह आंदोलन की घोषणा कर दी। इसके परिणामस्वरुप एक ऐसा राजनीतिक भूचाल आया, जिसने 1919 के बसंत में समूचे उपमहाद्वीप को झकझोर दिया। इस सफलता से प्रेरणा लेकर महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता के लिए किए जाने वाले अन्य अभियानों में सत्याग्रह और अहिंसा के विरोध जारी रखे, जैसे कि 'असहयोग आंदोलन', 'नागरिक अवज्ञा आंदोलन', 'दांडी यात्रा' तथा 'भारत छोडो आंदोलन'। गांधी जी के इन सारे प्रयासों से भारत को 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता मिल गई।

मोहनदास करमचंद गांधी भारत एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनीतिक एवं अध्यात्मिक नेता थे। राजनीतिक और सामाजिक प्रगति की प्राप्ति हेतु अपने अहिंसक विरोध के सिद्धांत के लिए

उन्हें आंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। विश्व पटल पर महात्मा गांधी सिर्फ एक नाम नहीं अपितु शान्ति और अहिंसा का प्रतीक हैं। महात्मा गांधी दूसरों को कोई भी उपदेश देने से पहले उसे पहले स्वयं पर आजमाते थे। उनके विचार तथा कहे गये कथन प्रासंगिक है तथा पूरी दुनिया को रास्ता दिखाते हैं। महात्मा गांधी के पूर्व भी शान्ति और अहिंसा की के बारे में लोग जानते थे, परन्तु उन्होंने जिस प्रकार सत्याग्रह शांति व अहिंसा के रास्तों पर चलते हुए अग्रेंजों को भारत छोडने पर मजबूर कर दिया, उसका कोई दूसरा उदाहरण विश्व इतिहास में देखने को नहीं मिलता। तभी तो संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी वर्ष 2007 से गांधी जयंती को 'विश्व अहिंसा दिवस' के रुप में मनाए जाने की घोषणा की है।

गांधीजी के बारे में प्रख्यात वैज्ञानिक आइंस्टीन ने कहा था कि - 'हजार साल बाद आने वाली नस्लें इस बात पर मुश्किल से विश्वास करेंगी कि हड्डी-मांस से बना ऐसा कोई इंसान भी धरती पर कभी आया था। महात्मा गांधी अपने अतुल्य योगदान के लिये ज्यादातर ''राष्ट्रपिता और बापू'' के नाम से जाने जाते है। वे एक ऐसे महापुरुष थे जो अहिंसा और सामाजिक एकता पर विश्वास करते थे। उन्होंने भारत में ग्रामीण भागो के सामाजिक विकास के लिये आवाज उठाई थी, उन्होंने भारतीयों को स्वदेशी वस्तुओ के उपयोग के लिये प्रेरित किया और बहोत से सामाजिक मुद्दों पर भी उन्होंने ब्रिटिशों के खिलाफ आवाज उठायी। वे भारतीय संस्कृति से अछूत और भेदभाव की परंपरा को नष्ट करना चाहते थे। बाद में वे भारतीय स्वतंत्रता अभियान में शामिल होकर संघर्ष करने लगे।

भारतीय इतिहास में वे एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने भारतीयों की आजादी के सपने को सच्चाई में बदला था। आज भी लोग उन्हें उनके महान और अतुल्य कार्यों के लिये याद करते है। आज भी लोगो को उनके जीवन की मिसाल दी जाती है। वे जन्म से ही सत्य और अहिंसावादी नही थे बल्कि उन्होंने अपने आप को अहिंसावादी बनाया था। राजा हरिश्चंद्र के जीवन का उनपर काफी प्रभाव पडा। स्कूल के बाद उन्होंने अपनी लॉ की पढाई इंग्लैंड से पूरी की और वकीली के पेशे की शुरुवात की। अपने जीवन में उन्होंने काफी मुसीबतों का सामना किया लेकिन उन्होंने कभी हार नही मानी । वे हमेशा आगे बढते रहे। उनका प्रसिद्ध भजन यह था :

रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम।
ईश्वर अल्लाह तेरो नाम, सबको सन्मति दे भगवान।

महात्मा गांधी का जीवन काफी साधारण ही था। वे रंगभेद और जातीभेद को नही मानते थे। उन्होंने भारतीय समाज से अछूत की परंपरा को नष्ट करने के लिये भी काफी प्रयास किये और इसके चलते उन्होंने अछूतों को ''हरिजन'' का नाम भी दिया था। जिसका अर्थ ''भगवान के लोग'' था। महात्मा गांधी एक महान समाज सउधारक और स्वतंत्रता सेनानी थे और भारत को आजादी दिलाना ही उनके जीवन का उद्देश्य था। उन्होंने काफी भारतीयों को प्रेरित भी किया और उनका विश्वास था की इंसान को साधारण जीवन ही जीना चाहिये और स्वावलंबी होना चाहिये। गांधीजी विदेशी वस्तुओं के खिलाफ थे इसीलिये वे भारत में स्वदेशी वस्तुओं को प्राधान्य देते थे। इतना ही नहीं बल्कि वे खुद चरखा चलाते थे। वे भारत में खेती का और स्वदेशी वस्तुओं का विस्तार करना चाहते थे। वे एक अध्यात्मिक पुरुष थे और भारतीय राजनीति में वे अध्यात्मिकता को बढावा देते थे।

महात्मा गांधी का देश के लिए किया गया अहिंसात्मक संघर्ष कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने पूरा जीवन देश को स्वतंत्रता दिलाने में व्यतीत किया। और देशसेवा करते करते ही 30 जनवरी 1948 को इस महात्मा की मृत्यू हो गयी और राजघाट, दिल्ली में लाखों समर्थकों के हाजिरी में उनका अंतिम संस्कार किया गया। आज भारत में 30 जनवरी को उनकी याद में शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिन्दी के प्रति महात्मा गांधी का प्रेम बडा गहरा था। आइए जानते हैं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के हिन्दी के प्रति विचार ...

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गुंगा है।

हृदय की कोई भाषा नहीं, हृदय-हदय से बातचीत करता है और हिन्दी हृदय की भाषा है।

अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता-समझता है। और हिन्दी इस दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।

ऐसे महान युगपुरुष को कोटी कोटी प्रणाम।

संकेत काळे
निरीक्षक (भूमि एवं भवन)
सीमा शुल्क मंडल, रत्नागिरी

हमारा आधुनिक डाक विभाग

हमारा डाक विभाग 150 वर्षों से अधिक पुराना है। यह डाक विभाग सभी लोगों कों ''अहर्निशम सेवामहे'' के तत्त्व पर सेवा देता आ रहा है। आज इस आधुनिक युग में डाक विभाग ने भी कई सकारात्मक बदलाव आये है, उनमें से कुछ सेवाएं निम्नतौर पर है।

1. आधार कार्ड नूतनीकरण / अद्ययावतन : इस वक्त आधार कार्ड जो भारतीय नागरिकों के लिए एक आधार ही बन गया है, इस आधार कार्ड का अद्ययावतन और नूतनीकरण अब हमारे डाक कार्यालय द्वारा किया जाता है। आधार कार्ड नूतनीकरण मुफ्त और अद्ययावतन सिर्फ 50 रुपयों में कर दिया जाता है।

2. रेल टिकट बुकिंग : अब रेल का टिकट निकालने के लिए लोगों को रेल स्टेशन पर ही जाना जरुरी नही है। वें हमारे डाक कार्यालय में जाकर रेल टिकट निकाल सकते है। रत्नागिरी जिले में लांजा, संगमेश्वर, खेड और रत्नागिरी आदि डाक कार्यालय में रेल टिकट बुकिंग चालू है।

3. पासपोर्ट / पारपत्र नूतनीकरण और नवीकरण : रत्नागिरी और सिंधुदुर्ग जिले के नागरिकों के लिए राजापूर डाक कार्यालय में पासपोर्ट / पारपत्र नूतनीकरण और नवीकरण की सुविधा चालू की गई है, रत्नागिरी और सिंधुदुर्ग जिले के नागरिकों को पासपोर्ट / पारपत्र नूतनीकरण और नवीकरण करने के लिए अब मुंबई मे जाने की कोई भी जरूरत नही है। अब राजापूर डाक कार्यालय में जाकर पासपोर्ट / पारपत्र नूतनीकरण और नवीकरण करना आसान हो गया है।

4. इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक : डाक विभाग को बैंकिंग लाइसेंस मिलने के कारण माह सितंबर 2018 में माननीय पंतप्रधान श्री. नरेंद्र मोदी जी के हाथों दिल्ली में इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक का शुभारंभ हुआ। जो बैंकिंग सुविधाए लोगों को डाक कार्यालय के खाते प्राप्त नही होती थी। सारी सुविधाएं अब इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक का खाता खोलने से प्राप्त हो गयी है, घर में बैठे बैठे ही IPPB MOBILE APP द्वारा अब मोबाईल रिचार्ज करना, टेलिफोन / मोबाईल का बिल भुगतान करना, DTH रिचार्ज करना, पैसों का अपने बैंक के खाते से अन्य बैंक के खाते मे हस्तांतरण करना जैसे की NEFT, RTGS और IMPS इस प्रकार की अन्य सुविधाए अब लोग इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक द्वारा घर बैठे प्राप्त कर सकते है।

रत्नागिरी जिले में हमारे कुल 638 डाकघरों में इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक की सुविधा उपलब्ध है। दिनांक 31 मे 2019 तक रत्नागिरी के सभी डाक कार्यालयों में लेकर कुल 48227 IPPB खाते निकले है।

5. इंटरनेट बैंकिंग सुविधा : माह जनवरी 2019 में हमारे डाक विभाग द्वारा इंटरनेट बैंकिंग सुविधा लोगों के लिए शुरू हुई है, इसमें लोग घर बैठे इंटरनेट बैंकिंग द्वारा अपने बचत खाते की रक्कम दुसरे व्यक्ति के बचत खाते में हस्तांतरण करत सकते है तथा नया सावधी (Time Deposit) खाता खोलना, बंद करना, अपने बचत खाते की रक्कम आवर्ती खाते में जमा करना आदि लाभ घर बैठे उठा सकते है।

''सिर्फ डाक / पत्र मतलब डाकघर'' ये सोच अब बहुत पुरानी हो चुकी है और अपना यह डाक विभाग अन्य रुप से अनेक सेवाएँ दे रहा है। इसमें गंगाजल की विक्री, गोल्ड बॉन्ड की विक्री, टपाल बिमा योजना, वेस्टर्न युनियन मनी ट्रान्स्फर, इन्स्टंट मनी ऑर्डर, सुकन्या तथा पीपीएफ खाता आदि अनेक प्रकार की सेवाएँ डाक विभाग सामान्य से लेकर सभी प्रकार के लोगों को देता आ रहा है और भविष्य में देता रहेगा इसमे कोई संदेह नही है।

''डाकघर में बचत तो सही रूप से सुरक्षित बचत''

आकाश इंजल
डाक सहाय्यक, रत्नागिरी

ऐ वक्त...

ऐ वक्त थोडा ठहर जा
कुछ अपने छुट गए है
उनके साथ रहना बाकी है

अपने बचपन की गलियों में
अभी खेलना मेरा बाकी है

कुछ लडकपन अभी बाकी है
कुछ अठखेलियाँ अभी बाकी है
ऐ वक्त थोडा ठहर जा

कुछ लम्हे जी लूँ
अपना सपना जीना अभी बाकी है

कई अरमान मार चुका हूँ
उन्हें मिलना अभी बाकी है
उन अरमानों को फिर से जीना बाकी है।
ए वक्त थोडा ठहर जा

बहुत समय से दौड रहा हूँ
थोडा आराम करना अभी बाकी है
लंबे अरसे से भाग रहा हूँ
अपने आप से मिलना अभी बाकी है
ऐ वक्त थोडा ठहर जा

मनिष पडिया,
बैंक ऑफ इंड़िया

रोजगार के क्षेत्र में हिंदी के बढ़ते कदम

हिंदी अपने देश की राजभाषा तो है ही। आज के दौर में इसमें रोजगार के अवसरों में भी कमी नहीं है। इसमें आप अपनी प्रतिभा द्वारा या शैक्षिक योग्यता बढ़ाकर बेहतरीन करियर संवार सकते हैं। बीते 26 जून 2018 को देश के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त द्वारा जारी किए आंकड़ों के अनुसार देश की कुल जनसंख्या में 43.63 प्रतिशत जनसंख्या की मातृभाषा हिंदी है। एथ्नोलॉग की रिपोर्ट के अनुसार हिंदी भाषा दूनिया में चीनी भाषा के बाद सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है।

हिंदी भाषा के महत्व को इसी बात से समझा जा सकता है कि, भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 (1) में देवनागरी लिपि में हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। यकीनन वैश्वीकरण और निजीकरण के वर्तमान परिदृश्य में अन्य देशों के साथ भारत के बढ़ते आर्थिक संबंधो को देखते हुए संबंधित आर्थिक साझेदार देशों की भाषाओं की अंतर शिक्षा की जरुरत महसूस की जाने लगी है। इसके साथ ही विदेशियों में भी हिंदी भाषा के प्रति रुचि दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यही कारण है कि कई देशों ने अपने यहां हिंदी भाषा को प्रोत्साहन देने के लिए शिक्षण केंद्रों की स्थापना की है। विदेशी छात्र भी हिंदी को लोकप्रिय और सरलता से सीखने योग्य भारतीय भाषा मानते हैं।

भूमंडलीकरण के बाद से हिंदी में तेजी से बदलाव देखने को मिला है। आज स्थिति यह है कि अमेरिका में 100 से ज्यादा संस्थानों में हिंदी की विधिवत पढ़ाई होती है। बड़ी संख्या में विदेशी छात्र हिंदी भाषा सीखने के लिए भारत आ रहे हैं। कई तकनीकी रोजगार, हिंदी के जरिए मिलते नजर आ रहे हैं। हिंदी के भविष्य और बाजार को देखते हुए कहना गलत न होगा कि आने वाला समय हिंदी के प्रोफेशनल्स के लिए और भी रोजगारपूरक होगा। आज स्थिति यह है कि, हिंदी भाषा के अच्छें जानकारों की कमी बढ़ती जा रही है। मांग बहुत अधिक है पर पूर्ति हेतू योग्य प्रोफेशनल्स नहीं मिल रहे हैं। यकीन के साथ यह कहा जा सकता है कि, हिंदी भाषा में आपको रोजगार के बहुत अवसर मिलेंगे। हिंदी भाषा में स्नातक, स्नातकोत्तर, एमफील, पीएचडी आदि की जा सकती है। इसके अलावा डिप्लोमा, पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी उपलब्ध हैं। इन कोर्सों या अन्य हिंदी भाषा से जुडे कोर्स जैसे अनुवादक, रचनात्मक लेखन करने के उपरांत रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध हो जाते हैं। यकीनन हिंदी भाषा में रोजगार की संभवानाएं अनंत हैं। गौरतलब है कि, हिंदी भाषा की अत्यधिक लोकप्रियता और बढ़ते आंतरराष्ट्रीय महत्व के साथ-साथ, हिंदी भाषा के क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में भी जबर्दस्त इजाफा हुआ है। केंद्र सरकार और हिंदी भाषी राज्यों की सरकारों के विभिन्न विभागों में हिंदी भाषा में कार्य करना अनिवार्य है। अतः केंद्र-राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों और इकाइयों में हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुवादक, हिंदी सहायक, राजभाषा प्रबंधक, आशुलिपिक, टंकक जैसे विभिन्न पदों की भरमार है। उल्लेखनीय है कि, भारत सरकार के अधीन वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग काम करता है। यहां पर हिंदी और अन्य सभी भारतीय भाषाओं के वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों को परिभाषित और नए शब्दों का विकास किया जाता है। यहां भी अंग्रेजी की जानकारी के साथ हिंदी भाषा में दक्ष लोगों के लिए रोजगार के ढेरों अवसर हैं।

गौरतलब है कि, निजी टेलीविजन चैनलों और एफएम रेडियो चैनलों की शुरुआत और स्थापित पत्र-पत्रिकाओं के हिंदी रुपांतर आने से इस क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में बेतहाशा वृद्धी हुई है। हिंदी मीडिया एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में संपादकों, संवाददाताओं, न्यूज रीडर्स, उपसंपादकों, प्रूफ रीडरों आदि की बहुत आवश्यकता है। इन क्षेत्रों में रोजगार की इच्छा रखने वालों के लिए पत्रकारिता, जनसंचार में डिग्री या डिप्लोमा के साथ हिंदी में अकादमिक योग्यता रखना आवश्यक है। आज सैकड़ों टेलीविजन चैनल हैं, जिन पर हिंदी में कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। यहां तक कि एनीमल प्लेनेट, डिस्कवरी चैनल और नेशनल जियोग्राफी जैसे अंग्रेजी चैनल भी हिंदी में कार्यक्रम बनाते हैं। हिंदी का बाजार इतना व्यापक हो गया है कि इन विदेशी चैनलों को भी हिंदी भाषा में प्रसारण करने को मजबूर होना पड़ा है। मनोरंजन जगतः आपमें प्रतिभा है तो आप रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा आदि के लिए स्क्रिप्ट राइटर, डायलॉग राइटर, गीतकार के रूप में भी करियर बना सकते हैं। इस क्षेत्र में प्राकृतिक एवं कलात्मक रुप से सृजनात्मक लेखन जरूरी है। अंतरराष्ट्रीय लेखकों के कार्यों का हिंदी में अनुवाद, हिंदी के लेखकों की कृतियों का अन्य भाषाओं में अनुवाद कार्य भी किया जा सकता है। फिल्मों की स्क्रीप्ट, विज्ञापनों को हिंदी या अंग्रेजी में अनुवाद करने का भी कार्य किया जा सकता है। इस क्षेत्र में करियर बनाने के लिए द्विभाषी दक्षता होना आवश्यक है। इस क्षेत्र में दक्ष व्यक्ति स्वतंत्र अनुवादक के तौर पर अपनी आजीविका चला सकता है और अनुभव के उपरांत खुद की अनुवाद फर्म को भी स्थापित कर सकता है।

हिंदी की पहुंच और बढ़ती लोकप्रियता के चलते प्रमुख आंतरराष्ट्रीय प्रकाशन संस्थानों ने न केवल हिंदी प्रकाशनों की शुरुआत की है अपितु श्रेष्ठ बिक्री लक्ष्य प्राप्त करने वाली पुस्तकों के बड़े पैमाने पर अनूदित रुपांतर हिंदी में प्रकाशित करना शुरू कर दिए हैं। अतः अन्य संस्थानों में भी अनुवादक, संपादक और कंपोजर के रूप में करियर के अवसर मौजूद हैं।

पत्र-पत्रिकाओं एवं प्रकाशकों के यहां प्रूफ रीडिंग, हिंदी टाइपिंग जानने वालों की बहुत मांग है। अंग्रेजी टाइपिंग करने वाले आपको बहुत मिल जाएंगे लेकिन हिंदी में टाइपिंग करना आज भी लोगों के लिए मुश्किल काम है। यदि हिंदी भाषा पर पकड़ बनाने के साथ-साथ हिंदी टाइपिंग भी

सीख ली जाएं तो प्रकाशकों के यहां जॉब करके अच्छा पैसा कमाया जा सकता है।

हिंदी भाषा में स्नातकोत्तर और पीएचडी कर चुकी उम्मीदवारों के लिए विदेशों में भी रोजगार के अवसर हैं। कुछ देशों द्वारा हिंदी को बिजनेस की भाषा स्वीकार किए जाने के फलस्वरुप विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा शिक्षकों की जबर्दस्त मांग है। शिक्षण कार्य : भारत में स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में शिक्षक के तौर पर भी परंपरागत शिक्षण व्यवसाय को अपनाया जा सकता है।

अध्यापन के क्षेत्र में अपना करियर बनानेवालों के लिए भी अनगिनत अवसर है। बीए, बीएड करने के बाद टीजीटी अध्यापक/माध्यमिक विद्यालय शिक्षक बना जा सकता है। आज टीजीटी अध्यापकों की मांग पूरे देश में है। उच्च माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की मांग भी कम नहीं है। एमए हिंदी में 55 प्रतिशत अंक लाने और एंट्रन्स क्लिअर करने के बाद एमफील, पीएचडी करने से महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर पढ़ाने की योग्यता हासिल हो जाती है। हिंदी प्राध्यापकों की नियुक्तियां गैर हिंदी भाषी प्रदेशों में भी होती हैं।

विदेशी कंपनियां भी अब हिंदी में विज्ञापन तैयार करवा रही हैं। यदि आप विज्ञापन के क्षेत्र में काम करना चाहते हैं तो इस क्षेत्र में नाम और शोहरत की कोई कमी नहीं है। देश में विदेशी चैनलों, विदेशी मीडिया का आगमन हुआ तो लगने लगा कि, हिंदी का वजूद घट जाएगा, लेकिन हिंदी की उपयोगिता का ही आलम है कि, आज सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल एवं सबसे ज्यादा पढ़ा जाने वाला समाचार पत्र हिंदी में ही है।

हिंदी सिनेमा भी लोगों के लिए एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। बीबीसी सहित कई वेबसाइट्स अपना हिंदी पोर्टल चला रहे हैं। माइक्रोसॉफ्ट ने भी हिंदी के माध्यम से वर्चस्व स्थापित करने के लिए हिंदी में ऑपरेटिंग सिस्टम शुरू किया हैं।

सतीश ए. धुरी
हिन्दी अनुवादक,
कोंकण रेलवे, मडगांव

सौदागर

अँधेरों का सहारा है उजली राहों पे,
रोशनी हो तो आँखें मींच लेता हूँ।
बंद आँखों से मंजिल ढूंढता हूँ,
और जब फिसलता हूँ तो यादों को थाम लेता हूँ।

कदम बढाता हूँ, फासले तय करता हूँ,
पलट के देखूँ तो रस्तों से घिरा हूँ।
हर मोड पे एक नयी मंजिल है,
उठ जाता हूँ हर बार जब भी गिरा हूँ।

उठ जाता हूँ हर बार जब भी गिरा हूँ।
चाल धीमी है, तो क्या हुआ,
तुफानों का वक्त हो चला है।
उन मंजिलों को भी तय कर लेंगे,
जहां उजालों का बस चला है।

साये छिपे हैं, कुछ परछाइयों के अँधेरों में,
जैसे खामोशी छिपी हो मुस्कुरातें चेहरे पे।
दे देना आवाज अगर सपने खो गए सफर में,
सौदागर हूँ मैं सपनों का, मिल जाऊंगा अगली मोड पे।

बिपिन विश्वकर्मा
बैंक ऑफ इंडिया, रत्नागिरी अंचल

संरक्षण - प्राकृतिक संपदाओंका

पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों में हवा, पानी मिट्टी, खनिज, ईंधन, पौधे और जानवर शामिल है। इन संसाधनों की देखभाल करना और इनका सीमित उपयोग करना ही प्रकृति का संरक्षण है। ताकि सभी जीवित चीजें भविष्य में उनके द्वारा लाभान्वित हो सकें। प्रकृति, संसाधन और पर्यावरण हमारे जीवन और अस्तित्व का आधार है। हालांकि आधुनिक सभ्यता की उन्नति ने हमारे ग्रह के प्राकृतिक संसाधनों पर बहुत प्रभाव डाला है। इसलिए आज प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरुरी है। प्रकृति या पर्यावरण का संरक्षण केवल स्थायी संसाधनों के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन को दर्शाता है। जिसमें वन्यजीव, जल, वायू और पृथ्वी शामिल है। अक्षय और गैर-नवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन है। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण आमतौर पर मनुष्यों की जरूरतों और रुचियों पर केंद्रित होता है - उदाहरण के लिए जैविक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मनोरंजक मूल्य।

संरक्षणवादियों का मानना है कि, बेहतर भविष्य के लिए विकास आवश्यक है। लेकिन जब परिवर्तन ऐसे तरीके से होते हैं, जो प्रकृति को नुकसान पहुंचते हों तो वे विकास नहीं, वरना आने वाली पीढियों के लिए विनाश का सबब बनते हैं। खाने, पानी, वायू और आश्रय जैसी सभी चीजें हमें जीवित रहने के लिए जरुरी हैं। ये सभी प्राकृतिक संसाधनों के अंतर्गत आते हैं। इनमें से कुछ संसाधन छोटे पौधों की तरह होते हैं। इन्हें इस्तेमाल किए जाने के बाद जल्दी से बदला जा सकता है। दूसरे, बड़े पेडों की तरह होते हैं। इनके बदलने में बहुत समय लगता है। यह अक्षय संसाधन है। अन्य संसाधन जैसे कि, जीवाश्म इंधन बिलकुल नहीं बदला जा सकता है। एक बार उपयोग करने के बाद ये पुनः प्राप्त नहीं किए जा सकते हैं। ये गैर नवीनीकरण संसाधन के अंतर्गत आते हैं।

यदि संसाधन लापरवाही से प्रबंधित होते हैं तो निश्चित रूप से संसाधनों का दुरुपयोग होता है और इससे जो संसाधन हैं, वे भी खतरे की जद में आ जाते हैं और इन अक्षय संसाधनों को बहुत अधिक समय तक उपयोग के लिए नहीं बचाया जा सकेगा। लेकिन अगर हम अपनी पीढियों से प्यार करे हैं तो इन प्राकृतिक संसाधनों को बुद्धिमानी से प्रबंधित करना होगा। पिछली 2 शताब्दियों में मनुष्यों की आबादी बहुत बड़ी हो गई है। अरबों लोग संसाधनों का इस्तेमाल करते हैं, क्योंकि वे भोजन व घरों का निर्माण करते हैं, वस्तुओं का उत्पादन करते हैं और परिवहन और बिजली के लिए ईंधन जलाते हैं। हम जानते हैं कि जीवन की निरंतरता प्राकृतिक संसाधनों के सावधान उपयोग पर निर्भर करती हैं।

संसाधनों को संरक्षित करने की आवश्यकता अकसर अन्य आवश्यकताओं के साथ संघर्ष करती है। कुछ लोगों के लिए एक जंगली क्षेत्र एक खेत लगाने के लिए एक अच्छी जगह हो सकता है। एक लकड़ी कंपनी, निर्माण सामग्री के लिए क्षेत्र के पेड़ों को काटकर उनका व्यापारिक प्रयोग करती है। एक व्यवसायी भूमि पर फैक्टरी या शॉपिंग मॉल का निर्माण करना चाहेगा। ऐसे कई तरीके हैं, जो किसी प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं। आज अधिकांश लोग प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए कई तरीके ढूंढ रहे हैं। हाइड्रोपॉवर और सौर ऊर्जा एक विकल्प है। इन स्रोतों से बिजली उत्पन्न हो सकती है और ये प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए सर्वोत्तम तरीके हैं। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने का एक तरीका है - रिसाइक्लिंग की प्रक्रिया। इसके माध्यम से प्रकृति और संसाधनों का संरक्षण हो सकता है। कई उत्पाद जैसे पेपर, कप, कार्डबोर्ड और लिफाफे पेड़ो से बनते हैं। इन उत्पादों को रीसाइक्लिंग करके आप 1 वर्ष में कई लाख पेड़ों को बचा सकते हैं। यह प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए एक बढ़िया तरीका है। भविष्य में इन संसाधनों को अच्छी तरह से स्थापित करने के लिए सतत वनों की प्रथा महत्वपूर्ण हैं। वनों का रोपण सिर्फ प्राकृतिक तरीकों से ही हो सकता है। ये मनुष्य की क्षमताओं में नहीं हैं। इसके लिए जंगल में स्वाभाविक रुप से क्षरण के लिए पेड़ तैयार करना ताकि उनके बीजों, पत्तियों एवं तनों से नए वृक्षों का निर्माण हो सके. यह 'डेडवुड' मिट्टी को तैयार करता है और अन्य तरीकों से प्राकृतिक पुनर्जनन में सहायक होता है। हमें जीवाश्म ईंधन के संरक्षण की आवश्यकता है, हालांकि हमारे जीवाश्म ईंधन वायु प्रदूषित करते हैं। जीवाश्म ईंधन को जलाने से कार्बन डाईऑक्साइड वायुमंडल में फैलती है। जिससे ग्लोबल वॉर्मिंग में योगदान होता है। ग्लोबल वॉर्मिंग हमारे पारिस्थितिक तंत्र को बदल रहा हैं।

महासागर गर्म और अधिक अम्लीय होते जा रहे हैं, जो समुद्री जीवन के लिए खतरा हैं। समुद्र के स्तर बढ़ रहे हैं और तटीय समुदायों के लिए खतरा पैदा हो रहा है। कई क्षेत्रों में अधिक सूखे का सामना करना पड़ रहा है, जबकि अन्य बाढ़ से पीड़ित है। दुनिया के कई हिस्सों में लोग पानी की कमी को भुगत रहे हैं। भूमिगत जलस्रोतों, जिन्हें एक्विफेर कहा जाता है, की कमी के कारण पानी की निरंतर कमी हो रही है। सूखे के कारण वर्षा की कमी या पानी की आपूर्ति भी प्रकृति के प्रदूषण का एक मुख्य कारण है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का अनुमान है कि 2.6 बिलियन लोगों के लिए पर्याप्त मात्रा में पीने के लिए स्वच्छ पानी नहीं है। पीने, खाना पकाने या धोने के लिए प्रदूषित पानी का उपयोग करने के कारण हर साल 5 लाख से अधिक लोग मरते हैं। पृथ्वी की आबादी का एक-तिहाई उन क्षेत्रों में रहता है, जो पानी के तनाव का सामना कर रहे हैं। इन क्षेत्रों में से ज्यादातर विकासशील देशों में पीड़ित हैं। जैवविविधता की सुरक्षा अब बहुत जरुरी है क्योंकि, जलवायू परिवर्तन को कम करने और साथ ही साथ जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अनुकूल होने के लिए जैवविविधता महत्वपूर्ण है।

यदि हम जैवविविधता की रक्षा नहीं करते हैं, तो इसका प्रभाव ग्लोबल वॉर्मिंग के प्रभावों के रूप में और अधिक हानिकारक हो सकता है। विशेष रुप से उष्णकटिबंधीय जंगलों की जैवविविधता हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। ये जंगल जलवायु परिवर्तन से लड़ने और किसी भी अन्य पारिस्थितिक तंत्र के प्रकार की तुलना में अधिक प्रजातियों के लिए महत्वर्पू हैं। दुसरे शब्दों में, हमारे स्वास्थ्य के लिए जैवविविधता की सुरक्षा आवश्यक है। इसके साथ ही जैवविविधता प्रकृति को संतुलित करने में मदद करती है।

गरीबी के स्तर को कम करने और जनसंख्या के जीवन स्तर में सुधार के लिए उच्च आर्थिक विकास आवश्यक है। उच्च आर्थिक विकास में प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण का अधिक से अधिक उपयोग करने की आवश्यकता होती है, जो बदल में उनकी गिरावट और अंततः क्षय का कारण बन जाती है। प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ी हुई आबादी का दबाव भी उनकी गिरावट में योगदान देता है। इसलिए उच्च विकास को स्थायी विकास तब तक नहीं कहा जा सकता है, जब तक कि इसके साथ पर्यावरण संरक्षण न हो। पर्यावरण के संरक्षण और समझदारी के इस्तेमाल पर बल देते हुए एक कुशल मांग प्रबंधन नीति भी इन संसाधनों के भंडार की आपूर्ति में वृद्धि कर सकती है। ऐसे संसाधनों के सामुदायिक प्रबंधन के माध्यम से संसाधनों को संरक्षित करने के विकल्प खोजने का प्रयास जरुरी है। विभिन्न समुदायों और उपयुक्त संस्थानों के उचित संपत्ति अधिकारों के अभाव में समुदाय प्रबंधन सफल नहीं हो सकता है। आज जरुरत हैं ऐसी सामुदायिक और पारिस्थितिक नीतियों की, जो पर्यावरण संरक्षण और प्रबंधन की भागीदारी प्रणाली में संलग्न हों।

संतोष पाटोळे
कोकण रेलवे , रत्नागिरी

धर्म

धर्म तू किस जैसा, जिसकी सत्ता उस जैसा,
कुदरत का नियम है बदलना, यहाँ बदलता इंसान है,
पानी ने ना धर्म पूछा, हर एक की प्यास बुझाई।
पेड पौधों ने भी धरती पर, सुंदरता की ओढी रजाई,
सूरज-चंद्रमा ने अपनी धूप-शीतलता में कभी कमी ना दिखलाई,
फिर क्यों इन्सानों ने इनमें की बटाई।
धर्म तू किस जैसा,
जिसकी सत्ता उस जैसा।।

विचारक का कोई धर्म नहीं, जनजागृती करना काम यही,
सत्ता के गलियारों में यह बने हैं नक्सली,
औरों को भी पड रही है गोली, करने से इनकी वकिली।
धर्म तू किस जैसा,
जिसकी सत्ता उस जैसा।

भूख, बेरोजगारी-गरीबी इन धर्म गुरुओं को,
कभी भी नहीं लगी करीबी,
धर्म के नाम पर जन-मानस को रखना
विज्ञान विचारों से दूरी,
इसी में है इनकी खूबी,
धर्म तू किस जैसा,
जिसकी सत्ता उस जैसा।

प्रशांत बापुराव शिंदे
प्रधान नाविक,
भारतीय तटरक्षक अवस्थान रत्नागिरी

पत्र

कार्यालय में पत्र का आशय उन पत्रों से लिया जाता है जो एक कार्यालय के मध्य न लिखे जाकर ग्राहकों या बाहरी कार्यालयों को लिखे जाते हैं। ये बैंक के मुद्रित पत्र शीर्ष (लेटर हेड) पर लिखे/टाइप किए जाते हैं। इनमें क्रमशः संदर्भ क्रमांक, दिनांक, संबोधिती का नाम व पता, सम्बोधन, विषय, मुख्य संदेश तथा भेजने वाले का हस्ताक्षर व पद नाम होता है।

ज्ञापन

कार्यालय के विभिन्न विभागों/कार्यालयों के मध्य संदेश का आदान-प्रदान ज्ञापनों के माध्यम से किया जाता है जिन्हें विशिष्ट रूप से आंतर कार्यालय ज्ञापन के नाम से जाना जाता है। ये परस्पर सूचना देने के लिए प्रयुक्त होते हैं जैसे किसी प्रस्ताव पर संबंधित अधिकारी से स्पष्टीकरण मांगना या सिफारिश करना, फर्नीचर आदि सामग्री क्रय करना आदि आदि। इन ज्ञापनों में संबोधनात्मक शब्द जैसे महोदय, प्रिय, महोदय आपका, भवदीय आदि नहीं होते हैं। इसके संदर्भ क्रमांक, दिनांक, संबोधिती का पदनाम, कार्यालय, स्थान, विषय, मुख्य संदेश तथा भेजने वाले का हस्ताक्षर और पदनाम होता है।

परिपत्र

जब समस्त कार्यालयों, विभागों आदि को एक सी सूचना या जानकारी विशेषकर नीतिगत, देना होता है तब किसी शाखा, कार्यालय या विभाग के नाम का संबोधन न कर समस्त शाखाओं और कार्यालयों को संबोधित किया जाता है। परिपत्र में उसे जारी करने वाले कार्यालय का नाम, संदर्भ क्रमांक, दिनांक, विषय तथा मुख्य संदेश, हस्ताक्षर करनेवाले अधिकारी का पद नाम होता है।

अनुस्मारक / स्मरणपत्र

इनमें किसी बात का स्मरण कराए जाने का मूल उद्देश्य निहित होता है। जब कभी पूर्व में जारी किए गए पत्र, ज्ञापन, परिपत्र आदि के माध्यम से मांगी गई जानकारी/रिपोर्ट प्राप्त नहीं होती है या नियत समय के भीतर प्राप्त नहीं होती तो संबंधित पत्र के समान पत्र के माध्यम से पूर्व पत्र का उल्लेख करते हुए अपेक्षित विषय पर उत्तर देने के लिए स्मरण कराया जाता है। सूचना उस पत्र को कहा जाता है जिसके माध्यम से किसी अन्य पक्ष को किसी मुद्दे पर ध्यान दिलाने या कोई बात उसे ज्ञात कराने का उद्देश्य हो। यह व्यक्ति विशेष, वर्ग विशेष को या समस्त जनता को संबोधित हो सकती है।

आदेश / कार्यालय आदेश

यह किसी सक्षम प्राधिकारी / कार्यालय प्रमुख द्वारा अपने किसी अधीनस्थ कर्मचारी के लिए या किसी विषय पर समय समय पर लिए गए निर्णयों का अनुपालन कराने का सूचना देने के लिए जारी किया जाता है। नियुक्ती, छुट्टियों की स्वीकृति तथा पदोन्नति आदि अनेक विषयों को कार्यालय आदेश के माध्यम से सूचित किया जाता है।

आवेदन पत्र

आवेदन पत्र का उपयोग किसी व्यक्ति द्वारा सक्षम प्राधिकारी या कार्यालय प्रमुख को अपनी किसी मांग पर निर्णय लेने/सूचित करने के लिए किया जाता है। इसमें प्रायः कोई मांग या अपेक्षा निहित होती है।

पृष्ठांकन

जब कोई पत्र मूलतः किसी शाखा/कार्यालय/व्यक्ति को संबोधित हो तथा उसकी सूचना किसी अन्य व्यक्ति को देना अपेक्षित हो तो उस पत्र की प्रतिलिपि उस अन्य पक्ष को पृष्ठांकन होती है। पत्र के निचले भाग में प्रतिलिपि शब्द अंकित कर संबंधित पक्ष का नाम तथा यदि उनका तत्संबंधी कोई पत्र हो तो उसका संदर्भ भी दे दिया जाता है।

संकल्प

संकल्प उस पत्र को कहा जाता है जिसमें किसी अधिकार प्राप्त निकाय/संस्था द्वारा विधिवत् लिया गया निश्चय अंकित होता है। यह संबंधित पक्ष व सदस्यों को संबोधित होता है तथ उस पर तदनुसार कार्यवाही करने की अपेक्षा की जाती है। यह सक्षम पदाधिकारी द्वारा हस्ताक्षरित होना है।

अर्धशासकीय पत्र

इस पत्र का उपयोग विभिन्न कार्यालयों / विभागों के विभिन्न अधिकारियों के बीच होता है। यह व्यक्तिगत नाम से लिखा तथा संबोधित किया जाता है तथा जब किसी विषय पर व्यक्तिगत सम्मति लेना, विलम्ब पर ध्यान आकर्षित करते हुए तुरंत कार्यवाही की अपेक्षा करना, संबोधिति का ध्यान व्यक्तिगत रूप से दिलाना हो तो अर्धशासकीय पत्र भेजा जाता है।

प्रेस विज्ञाप्ति/नोट

यह किसी सार्वजनिक / निजी संस्था / निकाय / व्यक्ति द्वारा सार्वजनिक सूचना देने के लिए समाचार पत्रों को प्रकाशनार्थ भेजा पत्र होता है जिसमें किसी विषय पर नीति स्पष्टीकरण, कोई जानकारी आदि होती है।

ई-मेल

ये शीघ्र सूचना के लिए उपयोग में लाए जाने वाली प्रणाली है। यूनिकोड के प्रयोग से अब ई-मेल भी हिंदी में लिखना बहुत ही सरल हो गया है।

अशासकीय ज्ञापन नोट

अशासकीय रूप से किसी बात की जानकारी देने/प्राप्त करने आदि के लिए भेजा जाता है।

अधिसूचना

संविधान के अंतर्गत शक्ति प्राप्त किसी निकाय/संस्था द्वारा सार्वजनिक जानकारी के लिए जारी की गई सूचना है।

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2019-20 का वार्षिक कार्यक्रम

अ.क्र.	कार्य विवरण	''क'' क्षेत्र	''ख'' क्षेत्र	''ग'' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100 % 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100 % 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65 % 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 100 % के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90 % 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90 % 1. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55 % 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 90 % के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को55% 1. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को55% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति

अ.क्र.	कार्य विवरण	''क''	''ख''	''ग''
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर में दिया जाना	100 %	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपीक की भरती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में टिक्टेशन/ की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथासहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद।	100%	100%	100%

अ.क्र.	कार्य विवरण	''क''	''ख''	''ग''
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13	(1) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यून)	25% (न्यून)	25% (न्यून)
(2)	मुख्यायलय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यून)	25% (न्यून)	25% (न्यून)
(3)	विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहाकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100 %		

(क)	हिंदी में पत्राचार (भारत/विदेश स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के साथ)	50%
(ख)	फाइलों पर हिंदी में टिप्पण	50%
(ग)	वर्ष के दौरान नराकास की आयोजित बैठकों की संख्या (नराकास का गठन किसी नगर में केंद्र सरकार के 10 कार्यालय या अधिक होने की स्थिति में किया जाए)	वर्ष में कम से कम 02 बैठकें
(घ)	वर्ष के दौरान विराकास (विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति) की आयोजित बैठकों की संख्या (विराकास का गठन कार्यालय-अध्यक्ष की अध्यक्षता में किया जाए)	वर्ष में कम से कम 4 बैठकें
(ड)	कंप्यूटरों सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी उपलब्धता	100%
(च)	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी/आशुलिपिक	प्रत्येक कार्यालयों में कम से कम एक
(छ)	दुभाषियों की व्यवस्था	प्रत्येक मिशन/दूतावास में स्थानीय भाषा से हिंदी में और हिंदी से स्थानीय भाषा में अनुवाद के लिए दुभाषिए की व्यवस्था की जाए।

Advise Shri _____	श्री _____ को सूचित करें
Approved	अनुमोदित
Arrange meeting	बैठक की व्यवस्था करें
Ask shri _____ to meet me	श्री _____ को मिलने के लिए कहें
Attend immediately	तत्काल कार्रवाई करें
Attend meeting	बैठक में भाग लें
Await Reply	उत्तर की प्रतीक्षा करें
Call for the Report	रिपोर्ट मंगवाएं
Clarify the postion	स्थिति को स्पष्ट करें
Condust inquiry	जांच कराएं
Congratulation	बधाई
Contact _____ Bank	_____ बैंक से संपर्क करे
Deal it on priority	प्राथमिकता के आधार पर कार्रवाई करें
Defer the meeting	बैठक स्थगित करें
Do the needful	आवश्यक कार्रवाई करें
Evasive/Unconvincing replies not-acceptable	अस्पष्ट/अविश्वसनीय उत्तर स्वीकार्य नहीं हैं
Excellent	बहुत अच्छा
Expedite action	शीघ्र कार्रवाई करें
File	फाइल
Financial for the period ended _____ need to be obtained	_____ को समाप्त अवधि की वित्तीय स्थिति प्राप्त करने की आवश्यकता है
Fix meeting On _____	_____ को बैठक रखें
For immediate compliance	तुरन्त अनुपालन हेतु
Give appointment	मुलाकात का समय दे
Give comments	टिप्पणियां दें
Give details	ब्योरे दें
Give your opinion	अपनी राय दें
Good job done	अच्छा कार्य
Highly objectionable	अत्यंत आपत्तिजनक
I agree/disagree	मैं सहमत/असहमत हूं
I am not concerned	यह मुझसे संबंधित नहीं है
I am satisfied	मैं संतुष्ट हूं
I appriciate	मैं सराहना करता हूं

5 जून – जागतिक पर्यावरण दिन

दरवर्षी 5 जून हा दिवस जागतिक पर्यावरण दिन साजरा करण्यात येतो. जागतिक उष्णतामानात सतत होणारी वाढ, हवामान व ऋतूमध्ये होणारा बदल या पार्श्वभूमीवर पर्यावरण संतुलन व जैवसृष्टीची स्थिरता ठेवण्यासाठी पर्यावरणाची गुणवत्ता वाढविणे, समस्या व संवर्धनाविषयी जागरुकता निर्माण करणे आणि पर्यावरणपूरक विषयक निर्णय घेण्याची क्षमता निर्माण व्हावी म्हणून पोषक वातावरणाची निर्मिती करणे हा पर्यावरण दिन साजरा करण्यामागचा मुख्य उद्देश अथवा हेतू आहे.

सजीव-निर्जीव यामधील क्रिया-प्रतिक्रिया व आंतरक्रियांमधून साकार झालेली सजीवांच्या सभोवतालची परिस्थिती म्हणजे पर्यावरण. पहिल्या महायुद्धानंतर मानवाच्या निसर्गावरील आघाताचे परिणाम शास्त्रज्ञांच्या लक्षात आले. त्याप्रमाणे औद्योगिक क्रांतीच्या फळाबरोबर त्याचे दूरगामी गंभीर परिणाम मनाला भेडसावू लागले आहेत. इ.स. 1960 मध्ये पर्यावरण शास्त्र किंवा पर्यावरण विज्ञान असे विषय पुढे आले आहेत. मानव हा पर्यावरणाचाच कुशाग्र घटक आहे. पर्यावरणाच्या प्रत्येक घटकात मानवी हस्तक्षेप सातत्याने वाढत आहे. त्यामुळे पर्यावरण आपत्ती शास्त्रीय पद्धतीने अध्ययन व त्यावर परिणामकारक उपाय योजना करणे अत्यंत आवश्यक गरजेचे बनलेले आहे.

पर्यावरण विज्ञानामध्ये तत्व सिद्धांत व जैविक - अजैविक घटकामध्ये आंतरक्रियाचा अभ्यास आपण करत आहोत. यापुढे मृदावरण जोपासना, जलावरण व वातावरण या सर्व घटकांचा समावेश आहे. पर्यावरण शिक्षणामध्ये ज्ञान, आकलन, कौशल्य, जागृती आणि प्रत्यक्ष अनुभव घेऊन प्रत्येकाने आपली भूमिका ही सकारात्मक पद्धतीने तयार करणे गरजेचे आहे. निसर्गाद्वारे उपलब्ध झालेली संसाधने व नैसर्गिक प्रक्रियेद्वारे आपल्याला स्वच्छ व प्रदूषण मुक्त पर्यावरण प्राप्त होत असते. पृथ्वीवरील पर्यावरणाचा होणारा ऱ्हास, बदलत्या कानात पर्यावरणावर वाढत असलेला कार्बनडायऑक्साइड ही बाब सध्या सर्वांचीच डोकेदुखी बनलेली आहे.

पर्यावरण संतुलित ठेवण्यासाठी कोंकण रेल्वे सातत्याने प्रयत्नशील व कटिबद्ध आहे. कोंकण रेल्वे याकामी पुढाकार घेऊन रेल्वे मार्गाच्या दुतर्फा गेल्या दहा वर्षांमध्ये लाखोंच्या संख्येने वृक्षारोपण केले आहे. कोंकण रेल्वे सातत्याने हिरवाईचा पदर आवरण वाढवत आहे. खासकरुन कोंकण रेल्वेचे भराव लेव्हल क्रॉसिंग व कटिंग यांच्यावरील हरित आवरण वाढविण्याचा प्रयत्न करीत आहे. यामध्ये बहावा, गुलमोहर, बोगनविलिया, पेल्टोफोर्मा कांचन, चाफा तसेच फळझाडांमध्ये जांभूळ, काजू, सीताफळ, फणस, कोकम व जंगली झाडे औषधी वनस्पती यांची लागवड करत आहे. पर्यावरपूरक कार्यपद्धती हे कोंकण रेल्वेचे खास वैशिष्ट्य आहे. दरवर्षी नवनवीन ठिकाणी या कामी जागा उपलब्ध करून देण्यात येते. आता तर कोंकण रेल्वे स्टेशन परिसरातील मोकळ्या जागेमध्ये वृक्ष लागवड करण्याचे उद्दिष्ट ठेवलेले आहे. त्याची कार्यवाही करण्याचे काम प्रगतीपथावर आहे.

पर्यावरण संतुलित ठेवणे कामी कोंकण रेल्वेने केलेल्या प्रयत्नात मोठ्या प्रमाणात यश आलेले आहे. कटिंगमधील माती घसरून रेल्वे मार्ग बंद होण्याच्या घटना होत नाहीत. मातीची होणारी धूप थांबलेली आहे. त्यामुळे रेल्वे वाहतूक अखंडपणे, सुरळीत व सुरक्षित झालेली आहे. कोंकण रेल्वे मार्गावरती सध्या पर्यटकांची संख्या दिवसेंदिवस वाढत आहे. याचे मुख्य कारण म्हणजे रेल्वे मार्गाच्या दुतर्फा असलेली मनमोहक वृक्ष, हरित आवरण व कमीत कमी वेळेत इच्छित स्थळी जाणे पर्यटकांना कोंकण रेल्वेमुळे शक्य झालेले आहे. दिवसेंदिवस पर्यटकांचा कल कोंकण रेल्वेमार्गावरून प्रवास करण्याकडे वाढत आहे. यामुळे कोंकण रेल्वे बरोबरच कोंकणचा ही विकास होण्यास मदत मिळालेली आहे. कोंकण रेल्वेमार्गावरून जलद गाड्यांची संख्या आता वाढलेली आहे. त्यामुळे पर्यटक जनशताब्दी, तेजस, हमसफर, डेक्कन ओडीसी व राजधानीसारख्या रेल्वे गाड्यांमधून निसर्गसौंदर्याचा आस्वाद घेत इच्छित स्थळी सुरक्षित व जलद प्रवास करीत आहेत.

या सर्व गोष्टींमधून एकच स्पष्ट होते की नैसर्गिक संपत्तीचे जतन करणे व जास्तीत जास्त वृक्षलागवड करून पर्यावरणाचा समतोल राखणे हे प्रत्येक घटकाचे काम आहे. म्हणूनच 'वृक्षवल्ली आम्हा सोयरे वनचरे' या पंक्ती वारंवार मनात नेहमी घोळत राहतात.

बाबासाहेब सुरेंद्र नाडगे
वरिष्ठ क्षेत्रीय अभियंता, रत्नागिरी

"मला आवडलेले पुस्तक - भाषण"

कर्मयोग ही गीतेतील शिकवण, माणसाने सतत कार्यरत राहून स्वतःचा व समाजाचा विकास केला पाहिजे. कार्यरत राहिल्याने शरीर निरोगी तर मन प्रसन्न राहते. मनुष्याचा विकास होतो. निती, धैर्य टिकून राहते आणि आत्मनाश टळतो. निष्ठापूर्वक काम हा आधुनिक संस्कृतीचा पाया तर गरीबी नष्ट करण्याचा मार्गही आहे. या पुस्तकात अनेक परदेशी लोकांची उदाहरणे देत लेखकाने जीवन सुंदर बनवण्यासाठी 'कामाशिवाय दुसरा मार्ग नाही' हे सिद्ध केले आहे.

श्री समर्थ रामदास म्हणतात,

"सुखा आंग देऊ नये। प्रेत्न पुरुषें सांडू नये।
कष्ट करिता त्रासों नये। निरंतर।।"

माणसासाठी कामाचे विश्व फार व्यापक आहे आणि तितकेच मनोवेधकही आहे. ज्या माणसाला कार्यातून कर्तबगारी दाखवता येते तो सर्वात सुखी असतो. माणसाच्या गरजा पुरवणारी आणि भावनांचे समाधान देणारी एकमेव गोष्ट म्हणजे काम. मग ते अगदी बागकामापासून राष्ट्र कामापर्यंत. माणसे जेव्हा आपल्या कामावर उत्कट प्रेम करतात तेव्हा उच्च दर्जाची संस्कृती निर्माण होते. बौद्ध धर्मियांच्या मताप्रमाणे, माणूस आपला अहंकार सोडून सहकार्याने काम करत असेल तर चांगले जीवन जगण्याकरता आवश्यक त्या वस्तू आणि सेवा निर्माण करता येतात. माणसाच्या अंगचे गुण वाढीस लागतात आणि दृष्टीकोनातही फरक पडतो. कामात बदल केल्याने विश्रांतीचे सुख प्राप्त होते.

सतत कार्यरत राहिल्याने माणसाच्या अंगचे दुर्गुण, कंटाळा आणि दारिद्र्य या अरिष्टांचे निवारण होते. यासाठी लेखकाने 'कॉंदिद' या कादंबरीचे उदाहरण दिले. तसेच या तरुणाच्या प्रवृत्ती निर्माण करतो आणि समाजाचा विनाश होतो. कामामुळे माणसाला स्वातंत्र्य मिळते आणि आपोआपच त्याचा शारीरिक व मानसिक विकास होतो.

माणसांना कामाचा तिटकारा वाटतो कारण निसर्गतः तो आळशी प्रवृत्तीचा आहे. परंतु माणसाच्या शरीरात सतत कामामुळेच ऊर्जा निर्माण होते आणि मानवी देहाची यंत्रणा निरोगीपणे चालू राहते. माणसाचे मानसिक सामर्थ्य मोठे आहे. त्याच्याकडे शिकण्याची व ज्ञानसंचय करण्याची प्रवृत्ती आहे. काहीतरी नवीन करण्याची आकांक्षा आहे. स्वतःला समजून घेण्याची जिज्ञासा आहे. काम हा माणसाचा खरे रुप दाखवणारा आरसा आहे. कामामुळेच तर व्यक्तीचा इतिहास गौरवशाली होतो. वर्तमान आनंदी राहते तर भविष्य उज्ज्वल होते. कामामुळेच माणसाची प्रकृती आणि हित साधले जाते. सामाजिक संस्थांनी व्यक्तीमधील कार्य करण्याच्या विधायक प्रवृत्तीचा उपयोग करून घेतला तर जगाचे भलेच होईल.

प्राचीन काळापासून माणसांनी असे विचार व्यक्त केले की, 'कामात बदल म्हणजेच विश्रांती.' याचाच अर्थ असा माणसाला चोवीस तासातून पाच तास विश्रांती पुरेशी आहे आणि इतर सर्ववेळ तो कामासाठी उपयोगात आणू शकतो. माणसाला रिकामा वेळ मिळाला तर तो दुर्गुणी होऊ शकतो. परंतु काम हे आयुष्याचा एक भाग बनले तर जीवनाला अर्थ प्राप्त होतो. कामामुळेच माणसाचे जीवन सुव्यवस्थित व शिस्तबद्ध होते. जे काम माणसाला मनापासून आवडते, त्याचे आकर्षण वाटते तेथे मन रमते, स्वाभिमान टिकून राहतो आणि व्यक्तिमत्व अबाधित राहते. उदा. खाटिक खान्यात अतिशय किळसवाणे काम करणाऱ्या सहा मुलींना जेव्हा काम बदलून देण्यात आले व कामाचा दर्जा उत्कृष्ट ठेवण्यात आला त्यावेळी त्यांनी अधिकाऱ्याकडे तक्रार केली. शेवटी समजले की इतरांना घाण वाटणारे काम मुलींना प्रिय होते कारण त्यांचा दिवस एकमेकींशी चर्चा करत चांगल्या प्रकारे व्यतीत होईल. मित्रमंडळ चांगले असल्याने सर्व अडचणींवर त्या मात करीत व त्यांचे कौतुकही होईल.

माणसाला सर्वोत्कृष्ट काम करण्यासाठी सहभाग फार आवश्यक आहे. गटाने काम करणे आणि पराकाष्ठेची भावना जपणे यातूनच उत्पादकता वाढते. माणूस जेथे काम करतो तेथे त्याचे महत्त्व असावे लागते आणि व्यवस्थापनात त्याचा सहभाग असावा लागतो तरच त्याला आंतरिक समाधान मिळते. माणसाला यशस्वी होण्यासाठी 'मौन' हे सोन्यासारखे साधन आहे. मौनामुळे आत्मपरीक्षण होतेच आत्मज्ञानही मिळते. तसेच विचारांची सखोलता वाढून सत्य अबाधित राहते. योग्यवेळी विश्रांती घेऊन कामास सुरुवात केली तर सर्जनशीलता वाढते. काम हे दोन प्रकारचे असते - शारीरिक आणि बौद्धिक. मनाची पूर्ण तयारी करूनच कामाची सुरुवात करावी लागते. एक काम संपले म्हणजे दुसऱ्या कामासाठी वेळ दवडण्यात अर्थ नसतो. कामाचे दडपण जर सतत असेल तर माणसाचा विकास होतो आणि वेळ फुकट जात नाही.

काम हे खेळाप्रमाणेच अतिशय मनोरंजक बनवू शकतो. त्रागा न करता आनंददायी कामाचा स्वीकार केला तर ते वरदान ठरते. माणूस स्पर्धात्मक खेळासारखे शक्ती एकवटून निष्ठेने काम करू लागला तर तो प्रावीण्य संपादन करतो. कामातील परिपूर्णता हे ध्येय असेल तर गुणांचा उपयोग करून तो सुखाचा कळस गाठतो.

सौंदर्याची अनुभूती प्रत्येकाला ओढ लावते. सुंदर गोष्टींची निर्मिती आनंद प्राप्त करून देते. जसे जपानमध्ये प्रत्येकालाच स्वच्छता आणि परिपूर्णतेचे वेड आहे. त्यामुळे इतर देशांमध्ये जे काम एक वर्षात होत असेल तेच काम जपानमध्ये सहा महिन्यात होते. आणि त्याचा आनंद जपानी लोक लुटतात. याचाच अर्थ साधी दैनंदिन कामे देखील कल्पकतेने आणि सुव्यवस्थित केली तर आकर्षक आणि सुंदर वाटतात. जो कामगार हत्यारे व्यवस्थित ठेवून यंत्र नियमितपणे साफ करत असेल तो आपोआप

सौंदर्य निर्मिती करतो.

काम हे सृजनशील असावे. ज्या गोष्टी दृष्टीस पडत नाहीत, अस्तित्वात नाहीत त्या गोष्टींचा आनंद सर्जनशीलतेतील कामामुळे अनुभवावयास मिळतो. सर्जनशीलता ही प्रत्येक क्षेत्रात, व्यवस्थापनेमध्ये उपयुक्त आहे. कामाचा समतोल साधणारी आणि बचत करणारी देखील आहे.

काम हे शिस्तबद्ध असेल तर निश्चित राष्ट्राचा विकास होतो. त्यासाठी वेळ, पद्धती आणि शक्ती या तीन शब्दांचा अर्थ समजावून घेऊन त्याप्रमाणे काम करता आले पाहिजे. अर्थात, वेळेचे मोजमाप, काटेकोर वाटप, वेळेवर काम, विश्रांतीच्या वेळेचा सदुपयोग, पद्धतीची नोंद वही, शिस्तबद्ध योजना, उद्दिष्ट्य, परिश्रम, काम तडीस नेण्याची प्रवृत्ती अंगी बाळगणे आवश्यक आहे. सुसंवाद आणि कामाबल कळकळ तेवढीच महत्त्वाची आहे.

उत्तम काम करण्यासाठी माणसांना पैसा, सत्ता आणि मानसन्मान या आवश्यक गोष्टी आहेत. मित्रांपेक्षा तज्ज्ञांची निवड आवश्यक आहे. योजनांचे फायदे वास्तवादी असावेत. दूरदर्शी आणि दीर्घकालीन विचार करणारी माणसे असावीत तरच राष्ट्र विविध उपक्रम करू शकते आणि कार्यामध्ये यशाचे नवे टप्पे गाठता येतात.

काम ही माणसाची नैतिक जबाबदारी आहे. आपल्या छोट्या छोट्या कामामुळेसुद्धा हजारो लोकांच्या सुखसोयी अवलंबून आहेत ही गोष्ट नेहमी लक्षात ठेवावी. दैनंदिन जीवनातील सकाळी उठल्यापासून रात्री झोपेपर्यंत लागणाऱ्या प्रत्येक गोष्टीसाठी कुणीतरी कार्यरत आहे ही भावना प्रामाणिकपणे मनात असली पाहिजे. खेड्यापाड्यात जाऊन पूर्वीच्या लोकांनी शिक्षणसंस्था उभारल्या म्हणून तर आज आपण सुखसुविधा भोगतो आहोत ही गोष्ट ध्यानात ठेवी.

काम हेच सर्वश्रेष्ठ गुरू असून तो जन्माचा सोबती आहे. सरावामुळे माणूस परिपूर्ण होतो. कामामुळेच आपल्याला पुष्कळ ज्ञान मिळते. काम शरीराला शिस्त लावते. कामामुळे आपल्याला आपली ओळख पटते, मर्यादा कळतात आणि सुप्त आवडी नैपुण्याची जाणीव होते. काम हा असा गुरू आहे, जो कडक आणि दयाळू आहे. बोलत नसला तरी प्रभावी आहे. प्रकाश देणारा मार्गदर्शन आणि सहाय्य करणारा आहे. आपली निष्ठा, कार्यक्षमता आणि चिकाटी याची परीक्षा घेणारा आहे. बहुमोल गोष्टीचे शिक्षण देणारा आहे.

कामातून असंख्य क्रांतिकारक बदल घडू शकतात. आधुनिक काळात माणूस एकमेकांपासून दुरावत चाललाय त्यामुळे काम हेच त्यावरचे औषध आहे. दुःखी कष्टी होण्यापेक्षा सतत काम करण्याची प्रवृत्ती असेल तर माणूस हताश होत नाही. विहिरीत पडलेला बेडूक सुद्धा सतत कार्यरत राहण्याने आपोआप बाहेर येतो. काम हेच दुःखावरील रामबाण औषध आहे. जीवनातील उद्विग्नतेच्या काळातही काम हेच मदतीस धावून येते. पत्नीच्या निधनानंतर टॉमसनने स्वतःला कामात वाहून घेतले. त्यामुळेच तो दुःखातून, वियोगातून बाहेर पडू शकला आणि अतिशय हळुवारपणे त्याने लोकसेवेचे व्रत स्वीकारले.

माणसाच्या इच्छा खूप आहेत आणि तो असमाधानी आहे. पण त्याचे जीवन साफल्य केवळ कामावरच अवलंबून आहे. बिकट अडचणींवर मात करून अभूतपूर्व पराक्रम गाजविण्याची आंतरिक तळमळ केवळ माणसात आहे. आत्मविकास अर्थात अंगभूत गुणांचा विकास ही सतत चालू असणारी प्रक्रिया आहे. माणूस आपल्या कामात पूजा भावाने रममाण होत असेल तर तो आत्मसाफल्य प्राप्त करतो. कामावर श्रद्धा असेल तर ते खेळाइतकेच हवेसे वाटणे हे कामाचे पारितोषिक आहे.

माणसाने काम हा खरं तर एक मनोज्ञ विषय आहे. माणूस कामामुळेच परिपूर्ण बनतो. आयुष्यातला खरा आनंद प्राप्त करतो, मनःशांती मिळवितो. राष्ट्राच्या दृष्टीने विचार केला तर आज निष्ठेने आणि सुव्यवस्थितपणे काम करण्याची गरज आहे. खरे तर या पुस्तकातील हे विचार केवळ वाचून थांबवण्यासारखे नाहीत तर अंगी बाणून जीवन सुंदर रसमय, मनोरंजक आणि शिकवण देणारी आहेत.

स. आ. सप्रे लिखित 'आपले काम आपले जीवन सर्वस्व' हे पुस्तक वाचनात आले आणि जीवनाविषयी गंभीरपणे विचार करायला प्रवृत्त झाले. खरं तर 1980 मध्ये दिल्लीमधून प्रकाशित झालेले याचे प्रथम संस्करण. याअर्थी अनेक लोकांच्या वाचनात हे पुस्तक आले असणारंच.

प्रा. डॉ. चित्रा मिलींद गोस्वामी
हिंदी विभाग, गोगटे-जोगळेकर महाविद्यालय, रत्नागिरी

अपघात - कारण मिमांसा व उपाय योजना

सकाळच्या प्रहरी मॉर्निंग वॉक करुन आल्यावर नैसर्गिक विधी उरकला. खुर्चीवर निवांत बसलो होतो. तेवढ्यात वर्तमानपत्र हातात पडले. एक एक पान वाचू लागलो तोच रस्त्यावरच्या अपघाताच्या बातम्या दृष्टीस पडल्या : ''चिपळुणात मोटारसायकल-ट्रकची धडक; एक ठार तर दापोलीजवळ एका अपघातात एक ठार व एक जखमी.''

मन सुन्न झाले, मनावर आघात झाला. किती भयंकर? मग थोड्या वेळाने शांतपणे विचार केला. मग मार्ग सापडला - या गोष्टींवर जर आपणास मात करावयाची असेल तर याचे सुक्ष्म परीक्षण-निरीक्षण करून उपाययोजना आखल्या पाहिजेत. त्यामुळे अपघात नक्कीच नामशेष होऊ शकतील, असे माझे ठाम मत झाले. सविस्तर व सारासार विचार केल्यास खालील गोष्टींचे अवलोकन करणे फायद्याचे होईल.

प्रथमतः अपघात कशामुळे घडतात याची कारणमिमांसा करूया. याची प्रमुख दोन कारणे आहेत :

1. असुरक्षित कृती, 2. असुरक्षित परिस्थिती

असुरक्षित कृती - यामध्ये मानवी चुकांचेच प्रमाण जास्त असते. त्या चुका पुढीलप्रमाणे येतात : 1. सुरक्षा नियमांचे पालन न करणे, 2. सुरक्षा साधने वापरायची नाहीत, 3. सावधानता न बाळगणे, 4. बेजबाबदारपणा किंवा दुर्लक्ष, 5. निष्काळजीपणाइ. कारणे सांगता येतील.

असुरक्षित परिस्थिती : यामध्ये मानवाची चूक नसली तरी ती असुरक्षित परिस्थिती हाताळणे आपलेच काम असते. यासाठी समन्वयाची भूमिका असणेची गरज आहे. ही असुरक्षित परिस्थिती कोठेही केव्हाही निर्माण होऊ शकते. त्याची ठिकाणे खालीलप्रमाणे असू शकतात.

1. रस्ते मार्ग, जलमार्ग, हवाईमार्ग, रेलवे मार्ग, 2. कारखाने (औद्योगिक, रासायनिक, इलेक्ट्रीकल्स इ.), 3. शाळा, प्रयोगशाळा, 4. घरामध्ये गॅस सिलेंडर, विद्युत उपकरणे, 5. सार्वजनिक ठिकाणे, 6. खेळाची मैदाने वगैरे वगैरे

या अपघातांचे समूळ उच्चाटन करणे आपले कर्तव्य आहे. या भावनेतून काही उपाययोजना केल्या तर नक्कीच असे अपघात घडणे बंद होईल, हे मी खात्रीने सांगू शकतो.

उपाययोजना : 1. सुरक्षा नियम पाळणे, 2. सुरक्षा साधनांचा कडेकोट वापर करणे, 3. सुरक्षेविषयी जनमानसात जागृती निर्माण करणे, 4. शासनाच्या सुरक्षाविषयक विधेयकाची अमलबजावणी करणे, 5. सुरक्षा विषयक नवीन नवीन धोरणे स्वीकारणे, 6. प्रत्येकाने सावधानता, खबरदारी, दक्षता जबाबदारी पाळणे, 7. सुरक्षाविषयक मेळावे भरविणे इत्यादी इत्यादी.

आपण अपघातांची शासकीय आकडेवारी पाहिली तर आपल्या निदर्शनास वय वर्षे 18 ते 25 वयोगटातील अपघाताचे प्रमाण प्रामुख्याने रस्त्यावरचे व कारखान्यातील व घरातील प्रमाण भयावह असल्याचे दिसून येईल.

रस्ते अपघात परिवहन मंत्रालय आकडेवारी 2016 सालामध्ये -

वयोगट 18 पेक्षा कमी	-	10622
वयोगट 18 ते 25	-	69851
वयोगट 25 ते 45	-	33558
वयोगट 45 ते 60	-	22174

कारखाना व घरगुती अपघात 2015 सालामध्ये

पुरुष	- 21833
महिला	- 11422

यावरुन आपल्या सहज लक्षात येईल ते म्हणजे वाहन चालवताना, कारखान्यात काम करताना, घरामध्ये काम करताना आपल्याकडून सुरक्षा साधनांच्या वापराचा अभाव दिसून येतो. त्यासाठी खालील सुरक्षा साधनांचा वापर केला तर अपघाताचे प्रमाण बऱ्यापैकी कमी झाले असते. सुरक्षा साधने - 1. हेल्मेट, 2. सेफ्टी बेल्ट, 3. गॉगल, 4. बूट, 5. ॲप्रन, 6. फेस स्क्रीन, 7. सुयोग्य गणवेष वगैरे वगैरे.

रस्त्यामध्ये खड्डे आहेत, झाड पडले आहे, खांब आडवे आहेत किंवा कारखान्यात उंचावरचे काम आहे, बंदिस्त जागेत वेल्डींग करावयाचे आहे, जागा निसरडी आहे, सामानाची अस्ताव्यस्त रचना अशा अनाकलनीय परिस्थितीमध्ये वरील सुरक्षा साधनांचा वापर हा अपरिहार्य असतो. अशा परिस्थितीमध्ये आपण योग्य त्या सुरक्षा साधनांचा वापर केला तर नक्कीच आपण अपघात टाळू शकतो. त्यामुळे याकडे दुर्लक्ष करून चालणार नाही हे आपण समजून घेतले पाहिजे.

शेवटी एकच. यावर सुरक्षाविषयक, सर्वांचे प्रबोधन होणे हिताचे होईल. म्हणून उत्साहवर्धक, प्रेरणादायी अशी सुरक्षाविषयक काही निवड घोषवाक्ये देत आहे. याचा दैनंदिन जीवनात आपणास नक्कीच लाभ मिळेल याची मी खात्रीशीर आशा बाळगतो.

घोषवाक्ये :

1. उद्योग हा धर्म, श्रम हे कर्म। त्याचे सुरक्षितता हेच मर्म।।
2. सुरक्षेचे नियम पाळा। संभाव्य अपघात टाळा।।

3. सुरक्षा साधने वापरा। अपघातावर मात करा।।
4. वाहन चालवा व्यवस्थित। कुटुंब राहील सुरक्षित।।
5. काम करा देऊन चोहीकडे लक्ष। नका होऊ अपघाताचे भक्ष।।
6. दररोज घरी जावे सुरक्षितपणे।
   वाट पाहती घरी कितीतरी मने।।
7. दाहीदिशा घ्यावा सुरेक्षाच मंत्र।
   सुखी जीवनाचे हेच खरे तंत्र।।
8. पायात बूट डोई हेल्मेट। हीच सुखी जीवनाची वाट।।
9. करीता कामाची घिसाडघाई। अपघातास निमंत्रण देई।।
10. सुरक्षितपणे स्वतः जगा, दुसऱ्याला पण जगू द्या।
    सुखी संसाराचा आनंद असाच वाटू द्या।।

महादेव आनंद माने,
सेवानिवृत्त सुरक्षा अधिकारी, रत्नागिरी

विश्व हिंदी दिवस समारोह के कुछ क्षण...

भारतीय तटरक्षक द्वारा विविध स्कूलों में प्रतियोगिता का आयोजन किया।

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आविष्कार गतिमंद बच्चों के पाठशाला में चित्र रंगभरण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।
पाठशाला को समिति द्वारा रु. 5,000/- की तथा अध्यक्ष श्री. बी.वी.एस. अच्युतराव जी ने रु. 2000/- की वित्तीय सहायता प्रदान की।

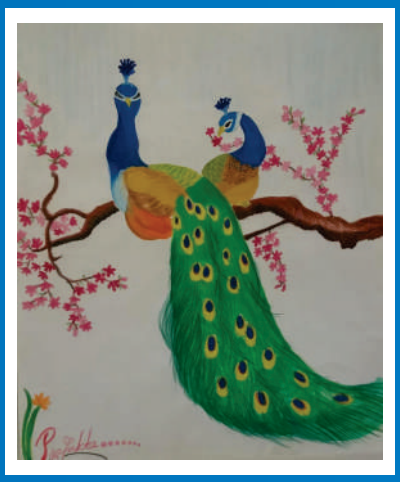

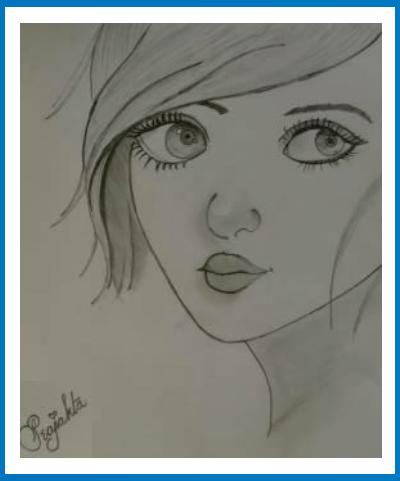

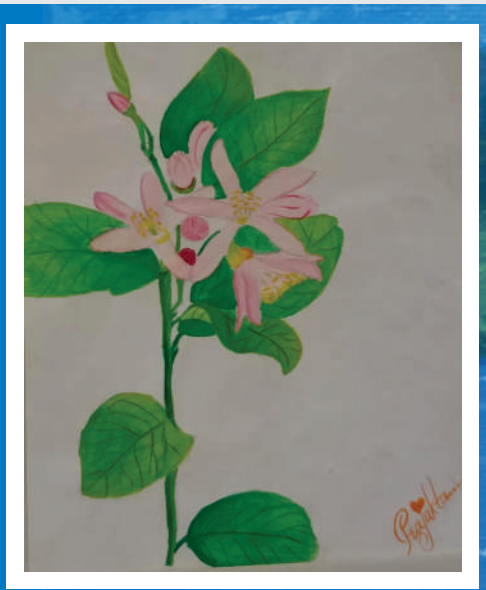

चित्रकार
गजानन भिसे

चित्रकार
प्राजक्ता देशमाने

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी

बैंक ऑफ़ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, शिवाजीनगर, रत्नागिरी 415 639 (महाराष्ट्र)